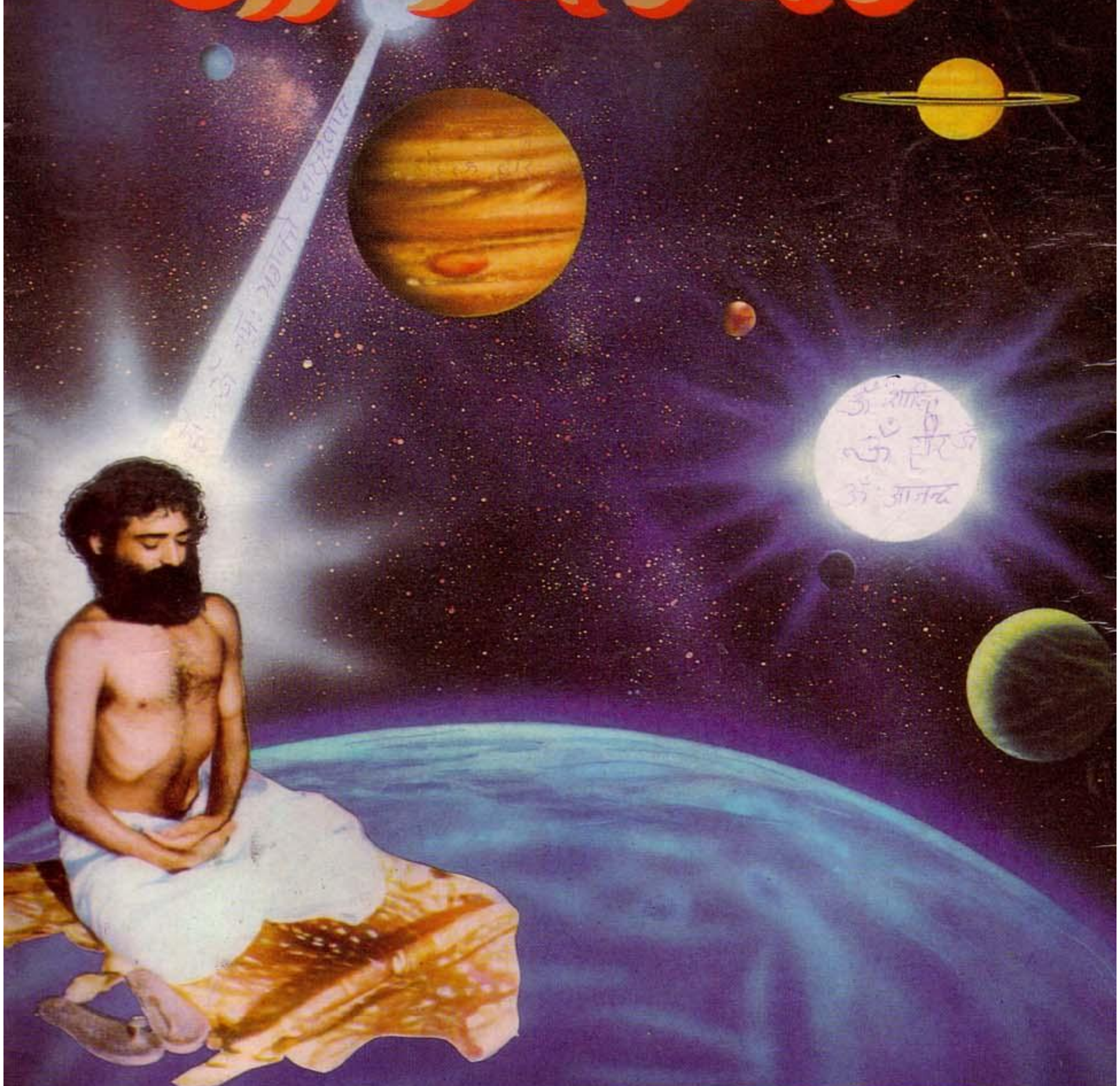
योगलीला



प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद संत श्री
आसारामजी बापू की सचित्र जीवनलीला



माता-पिता, शास्त्र एवं गुरुजनों का आदर करनेवाला वास्तव में चिर आदरणीय बन जाता है। तीनों लोक में ऐसे चिर आदरणीय बने हुए पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू महान वात्सल्यमयी माता की गोद में मस्तक रखकर **'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।'** इस उक्ति को गौरव प्रदान कर रहे हैं।

पूज्यश्री जैसा अनुपम पुत्ररत्न विश्व को अर्पण करनेवाली माता महंगीबा भी कैसी आनन्दित एवं कृतकृत्य हुई होगी ! धन्यवाद है भारत की ऐसी नारायणीस्वरूप महान नारी को !

....

योगलीला

प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू की सचित्र जीवनलीला

श्री योग वेदान्त सेवा समिति

संत श्री आसारामजी आश्रम

साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५. फोन : 7505010, 7505011.

जहांगीरपुरा, वरीयाव रोड़, सुरत-३९५ ००५. फोन : ६८५३४१.

Rs. 16-00

निवेदन

तत्त्वज्ञ महापुरुषों का सान्निध्य बड़ा दुर्लभ है । कबीरदासजी कहते हैं :

सुख देवें दुःख को हरे, करे पाप का अन्त । कह कबीर वे कब मिलें, परम सनेही संत ॥
संत मिले यह सब मिटे, काल जाल जम चोट । सीस नमावत ढही पड़े, सब पापन की पोट ॥

ऐसे महापुरुष के आगे जिन्हें अपने अहंकार रूपी शीश को झुकाने का सौभाग्य मिल जाता है, वे धन्य हो उठते हैं । स्थूल देहरूप में अवतरित ऐसे परमात्मपुरुष को कोई भाग्यशाली ही पहचान पाते हैं । लोग परमात्मा को ढूँढने जाते हैं और परमात्मा इन आँखों से कहीं नजर नहीं आता; क्योंकि वह अगम्य है । निराश मनुष्य फिर क्या करें ? उस अलख को कैसे जानें ? कैसे देखें ? कबीरजी ने इस पहेली का सुन्दर हल पेश करते हुए कहा है :

अलख पुरुष की आरसी साधु का ही देह । लखा जो चाहे अलख को इन्हीं में तू लख लेह ॥

हे मानव ! यदि तुझे उस अलख को लखना हो, जो जानने से परे है उसे जानना हो, जो देखने से परे है उसे देखना हो, तो तू ऐसे किसी संत महापुरुष को देख ले, क्योंकि उन्हीं में वह अपने पूर्ण वैभव के साथ प्रकट हुआ है ।

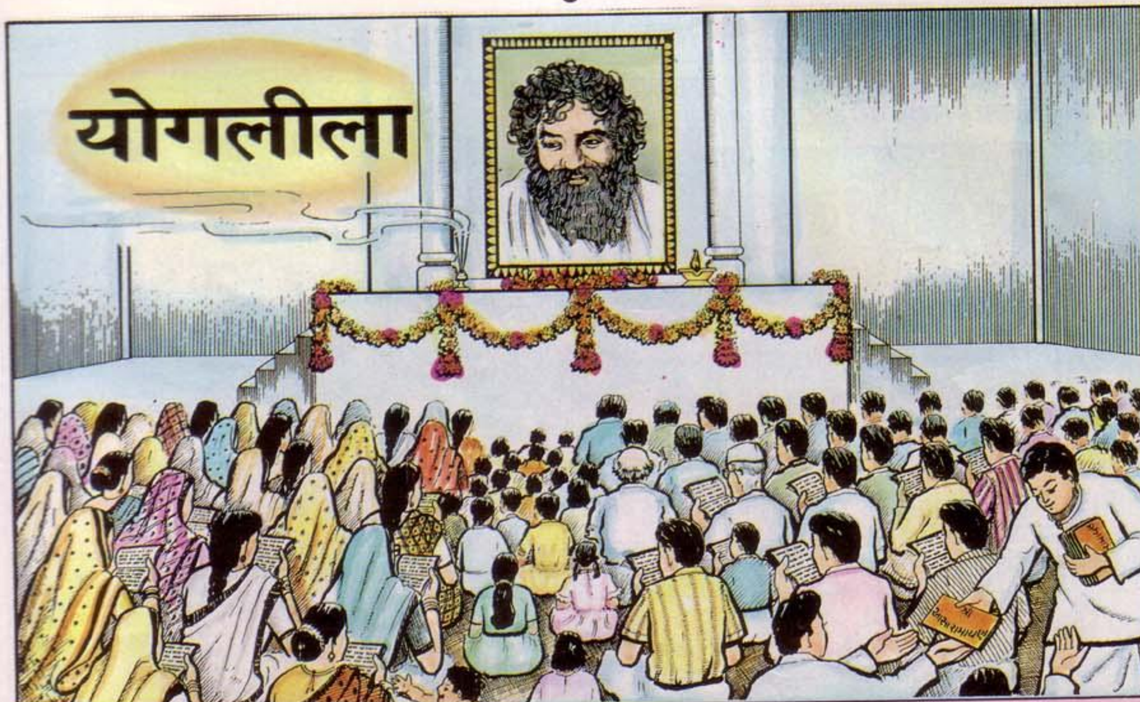
ऐसे महापुरुष संसाररूपी मरुस्थल में त्रिविध तापों से तप्त मानव के लिये विशाल वटवृक्ष हैं, शीतल जल के झरने हैं । उनकी पावन देह को स्पर्श करके आनेवाली हवा भी जीव के जन्म-जन्मांतरों की थकान को उतार कर उसके हृदय को आत्मिक शीतलता से भर देती है । ऐसे महापुरुष की महिमा गाते तो वेद और पुराण भी थक चुके हैं ।

ऐसे जीवन्मुक्त महापुरुष प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू की योगमय जीवनलीला की सौरभ का आस्वाद चित्रकथा के रूप में आबालवृद्ध सब को प्राप्त हो इस हेतु यहाँ प्रस्तुत की जाती है ।

हे जिज्ञासु हृदयों ! आइए... इस दिव्य शीतल अमृतमय परम पावनी गंगाधारा में अवगाहन कीजिए... अपने जन्म-जन्मान्तरों के पापों का प्रक्षालन करके युगों युगों के प्रवास की थकान उतारिए और पूज्यश्री की सचित्र जीवनलीला में से पावन प्रेरणा प्राप्त करके अपने जीवन को भी परम प्यारे परमात्मा के प्रति अभिमुख बनाइए... जीवन के परम लक्ष्य की सिद्धि के मार्ग में पदार्पण करके परम शान्ति का अनुभव कीजिए ।

– श्री योग वेदान्त सेवा समिति, अहमदाबाद आश्रम ।

माता-पिता की सेवा, साहस, संयम, पुरुषार्थ की पराकाष्ठा पर पहुँचने की प्रेरणा देनेवाला यह सचित्र प्रेरणा पुस्तक 'योगलीला' विद्यार्थियों को बारबार पढ़ाना चाहिए ।



गुरु चरण रज शीष धरि हृदय रूप विचार । श्री आसारामायण कहौं, वेदान्त को सार ॥
धर्म कामार्थ मोक्ष दे रोग शोक संहार । भजे जो भक्ति भाव से, शीघ्र हो बेड़ा पार ॥

अखण्ड भारतवर्ष के सिंध प्रान्त के नवाबशाह जनपद के बेराणी ग्राम में वि. संवत् १९९८, चैत्र वदी षष्टमी को कोटि-कोटि जगज्जीवों का समुद्धारक एक दिव्य तेजस्वी नक्षत्र नभोमण्डल में से अवनि पर अवतरित हुआ । इसके पिता होने का सौभाग्य गाँव के नगरसेठ श्री थाऊमल सिरुमलानी को प्राप्त हुआ । माँ महँगीबा के कोख से इस दिव्य नक्षत्र ने स्वरूप ग्रहण किया । इसका नाम रखा गया आसुमल ।



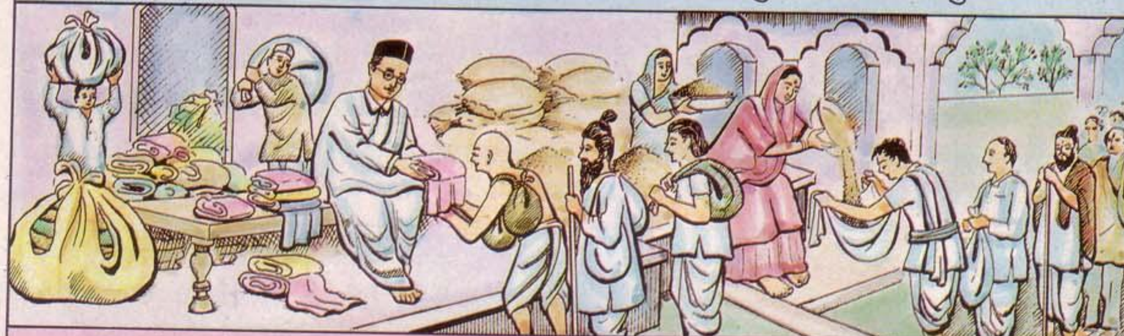
भारत सिंधु नदी बखानी, नवाब जिले में गाँव बेराणी । रहता एक सेठ गुण खानि, नाम थाऊमल सिरुमलानी ॥
आज्ञा में रहती मेंहगीबा, पति परायण नाम मंगीबा । चैत वद छः उन्नीस अठानवे, आसुमल अवतरित आँगने ॥

जन्म के दिन श्री थाउमल सेठ के यहाँ एक सौदागर का आगमन हुआ।



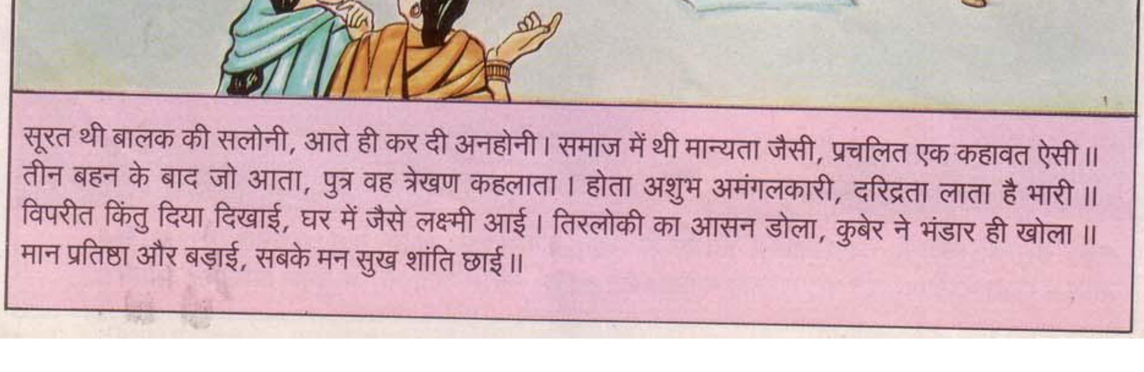
माँ मन में उमड़ा सुख सागर, द्वार पै आया एक सौदागर। लाया एक अति सुन्दर झूला, देख पिता मन हर्ष से फूला॥
सभी चकित ईश्वर की माया, उचित समय पर कैसे आया। ईश्वर की ये लीला भारी, बालक है कोई चमत्कारी॥

औदार्य-उदधि श्री थाउमलजी के यहाँ प्रतिदिन याचकों और भिक्षुकों की पंक्तियाँ जुटने लगी।



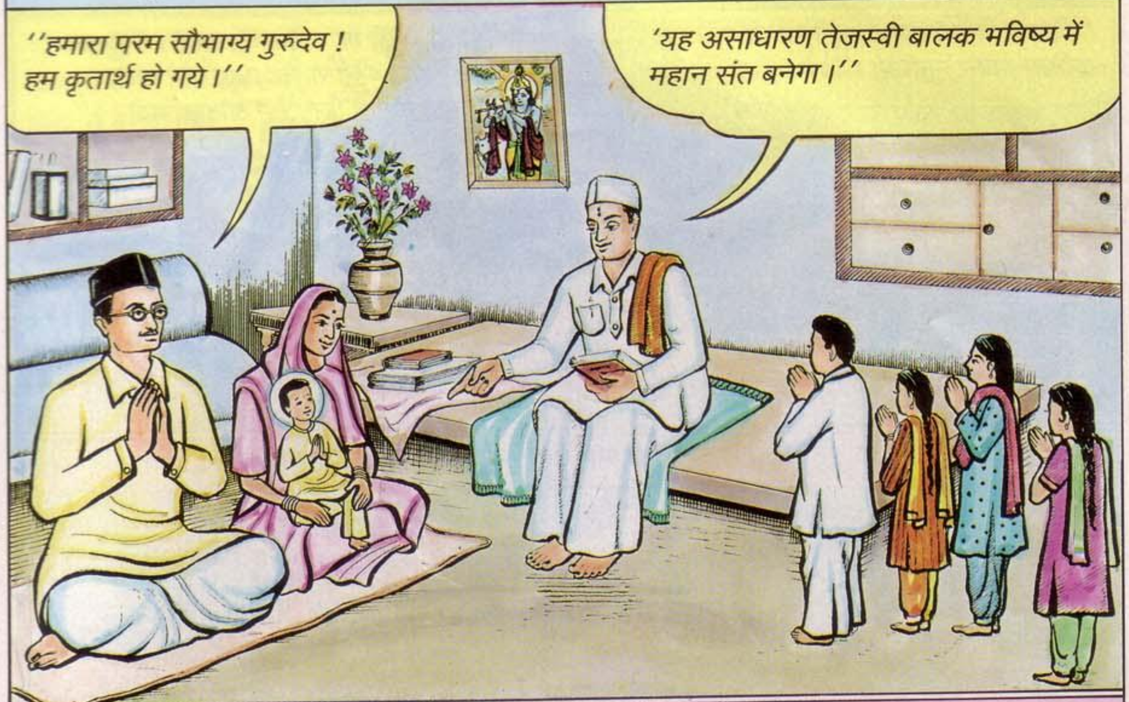
सन्त सेवा औ' श्रुति श्रवण, मात पिता उपकारी; धर्म पुरुष जन्मा कोई, पुण्यों का फल भारी.

महँगीबा बालक आसुमल को पालने में झुलाती हुई बैठी हैं। पड़ोसी स्त्रियाँ बातें करती हैं :



सूरत थी बालक की सलोनी, आते ही कर दी अनहोनी। समाज में थी मान्यता जैसी, प्रचलित एक कहावत ऐसी॥
तीन बहन के बाद जो आता, पुत्र वह त्रेखण कहलाता। होता अशुभ अमंगलकारी, दरिद्रता लाता है भारी॥
विपरीत किंतु दिया दिखाई, घर में जैसे लक्ष्मी आई। तिरलोकी का आसन डोला, कुबेर ने भंडार ही खोला॥
मान प्रतिष्ठा और बड़ाई, सबके मन सुख शांति छाई॥

बालक आसुमल तीन वर्ष का हुआ तब कुलगुरु परशुरामजी का आगमन हुआ।



तेजोमय बालक बढ़ा, आनन्द बढ़ा अपार। शील शांति का आत्मधन, करने लगा विस्तार॥
एक दिना थाऊमल द्वारे, कुलगुरु परशुराम पधारे। ज्यूँ ही वे बालक को निहारे, अनायास ही सहसा पुकारे॥
यह नहीं बालक साधारण, दैवी लक्षण तेज है कारण। नेत्रों में है सात्त्विक लक्षण, इसके कार्य बड़े विलक्षण॥
यह तो महान संत बनेगा, लोगों का उद्धार करेगा। सुनी गुरु की भविष्यवाणी, गदगद हो गये सिरुमलानी॥
माता ने भी माथा चूमा, हर कोई ले करके घूमा।

ज्ञानी वैरागी पूर्व का, तेरे घर में आय। जन्म लिया है योगी ने, पुत्र तेरा कहलाय॥
पावन तेरा कुल हुआ, जननी कोख कृतार्थ। नाम अमर तेरा हुआ, पूर्ण चार पुरुषार्थ॥

महँगीबा ने एक दिन आसुमल को जरी से जटित चमचमाता हुआ जामा पहनाया। आसुमल आनन्दित हो उठा। रात्रि के समय नक्षत्रमंडित आकाश को रूआब से निहारता रहा।



इस प्रकार बाल-वय से ही उसकी नसों में एक अजीब खुमारी अँगड़ाई लेती रही।

तीन वर्ष के होते ही आसुमल बड़े भाई के साथ स्कूल में जाने लगे।



आसुमल ने पूरी कविता गाकर सुना दी।

सन् १९४७ में काल के क्रूर पंजों में पिसकर भारत दो खण्डों में विभाजित हुआ।



सैंतालीस में देश विभाजन, पाक में छोड़ा भू-पशु औ' धन। भारत अहमदाबाद में आये, मणिनगर में शिक्षा पाये॥

विभाजन के बाद थाउमलजी अपने परिवार सहित अहमदाबाद के मणिनगर क्षेत्र में स्थिर हुए। आसुमल को स्कूल में पढ़ने को भेजा। छः वर्ष के आसुमल पढ़ने में बड़े ही तेजस्वी निकले।



बड़ी विलक्षण स्मरण शक्ति, आसुमल की आशु युक्ति। तीव्र बुद्धि एकाग्र नम्रता, त्वरित कार्य औ' सहनशीलता॥
आसुमल प्रसन्न मुख रहते, शिक्षक हँसमुखभाई कहते;

पिताजी स्कूल जानेवाले आसुमल की जेब बदाम, पिस्ते और काजू से भर दिया करते।



पिस्ता बदाम काजू अखरोटा, भरे जेब खाते भर पेटा।

बालक की प्रथम गुरु माँ होती है। महँगीबा आसुमल में बचपन से ही ध्यान-भजन का संस्कार-सिंचन किया करती।



महँगीबा ध्यानलीन आसुमल के सम्मुख मक्खन-मिश्री की कटोरी रख आती।



दे दे मक्खन मिश्री कूजा, माँ ने सिखाया ध्यान औ' पूजा।

कोठरी के एक कोने में आसुमल प्रभु-ध्यान में लीन है। मिलने के लिए आयी हुई पड़ोसन आसुमल की ओर महँगीबा का ध्यान आकृष्ट करती है। पड़ोसन से प्रेरित हो माता ने आसुमल को ध्यान-भजन कम करने की सीख दी पर वे अडिग रहे।



ध्यान का स्वाद लगा तब ऐसे, रहे न मछली जल बिन जैसे। हुए ब्रह्मविद्या से युक्त वे, वही है विद्या या विमुक्तये॥

आसुमल हररोज रात्रि में थके-माँदे पिताजी की चरणसेवा करते रहते।



बहुत रात तक पैर दबाते, भरे कंठ पितु आशिष पाते।
पुत्र तुम्हारा जगत में, सदा रहेगा नाम। लोगों के तुम से सदा पूरण होंगे काम॥

...और एक दिन अपने ज्येष्ठ पुत्र जेठानन्द के हाथों में परिवार की जवाबदारी सौंप थाउमलजी स्वर्ग प्रयाण कर गए।



सिर से हटी पिता की छाया, तब माया ने जाल फैलाया।

रामजी मंदिर में आसुमल कीर्तन में भावविभोर हो जाते। देर रात तक देहभान भुलाकर हरि-कीर्तन में उन्मत्त बन जाते।



आसुमल मंदिर में प्रभु के समक्ष अपनी हृदय-व्यथा खोलते हुए -



बड़े भाई का हुआ दुःशासन, व्यर्थ हुए माँ के आश्वासन।

बड़े भाई के उत्तरदायित्व त्याग देने के कारण आसुमल को सिद्धपुर में जीविका की तलाश करनी पड़ी। आसुमल माधुपावड़ी के समीप, पारस पीपल की छाया में स्थित कृष्णमूर्ति का नित्य ध्यान करते थे।



छूटा वैभव स्कूली शिक्षा, शुरु हो गई अग्नि परीक्षा। गये सिद्धपुर नौकरी करने, कृष्ण के आगे बहाये झरने॥
सेवक सखा भाव से भीजे, गोविन्द माधव तब रीझे।

आसुमल की भक्ति से प्रसन्न हो पुजारी एवं भक्तजन उन्हें 'भगवान' शब्द से संबोधित किया करते। एक बार एक दुःखिया स्त्री आसुमल के शरण में आ पड़ी -



एक दिना एक माई आई, बोली हे भगवन सुखदाई। पड़े पुत्र दुःख मुझे झेलने, खून केस दो बेटे जेल में॥
बोले आसु सुख पावेंगे, निर्दोष छूट जल्दी आवेंगे। बेटे घर आये माँ भागी, आसुमल के पाँवों लागी॥
आसुमल का पुष्ट हुआ, आलौकिक प्रभाव। वाक्सिद्धि की शक्ति का, हो गया प्रादुर्भाव॥

बड़े भाई जेठानन्द आसुमल के साथ पिता के परम्परागत शक्कर के व्यापार की चर्चा करते हुए –



बरस सिद्धपुर तीन बिताये, लौट अहमदाबाद में आये। करने लगी लक्ष्मी नर्तन, किया भाई का दिल परिवर्तन ॥
दरिद्रता को दूर कर दिया, घर वैभव भरपूर कर दिया।

बाजार के अन्य व्यापारी भी आसुमल से मार्गदर्शन लेने लगे।



बड़े भाई और मेहमानों के आग्रह से आसुमल को सिनेमा देखने जाना पड़ता। मेहमान तो सिनेमा में रचे-पचे रहते पर आसुमल...



सिनेमा उन्हें कभी न भाये, बलात् ले गये रोते आये।

अब दुकान पर जाने के बदले घंटों तक दरवाजा बंद करके आसुमल ईश्वरीय ध्यान में निमग्न रहने लगे। भूख-प्यास भूल करके ध्यान-भजन में ही रात बिताने लगे।





जिस माँ ने था ध्यान सिखाया, उसको ही अब रोना आया। माँ करना चाहती थी शादी, आसुमल का मन वैरागी॥

घर में परिवार के साथ माता महँगीबा बैठी हैं। छोटी मोटी आयु की तीन चार बालिकाओं तथा पुत्रवधू के साथ बातचीत कर रही हैं। वहीं एक व्यक्ति आकर समाचार देता है :



फिर भी सबने शक्ति लगाई, जबरन कर दी उनकी सगाई।

सगाई होने के बाद आसुमल पर शादी का दबाव पड़ने लगा। आसुमल ने टक्कर लेकर ढाई वर्ष तक शादी की अवधि दूर रखी। परन्तु घर के लोगों ने शादी की तिथि आखिर निश्चित कर ही डाली। वैरागी आसुमल इस बंधन को स्वीकारने के लिए तैयार न थे।



शादी को जब हुआ उनका मन, आसुमल कर गये पलायन।
पंडित कहा गुरु समर्थ को, रामदास सावधान। शादी फेरे फिरते हुए, भागे छुड़ाकर जान॥

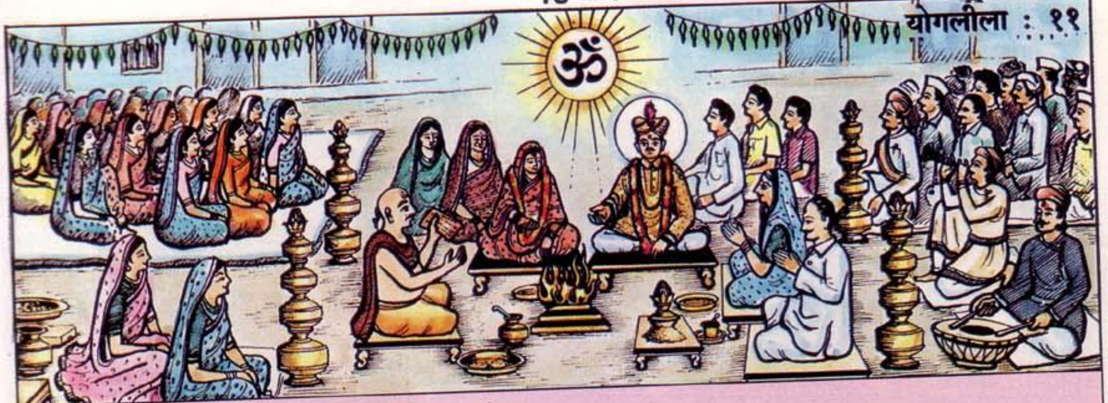
...और आसुमल शादी के आठ दिन पहले ही घर से भाग निकले। उनको ढूँढने के लिए सभी व्याकुल हो गये। बहुत खोज करने के बाद भड़ौच के अशोक आश्रम में उनका पता लगा।



करत खोज में निकल गया दम, मिले भरुच में अशोक आश्रम। कठिनाई से मिला रास्ता, प्रतिष्ठा का दिया वास्ता॥



...और आसुमल बड़े भाई के साथ घर वापस आये।



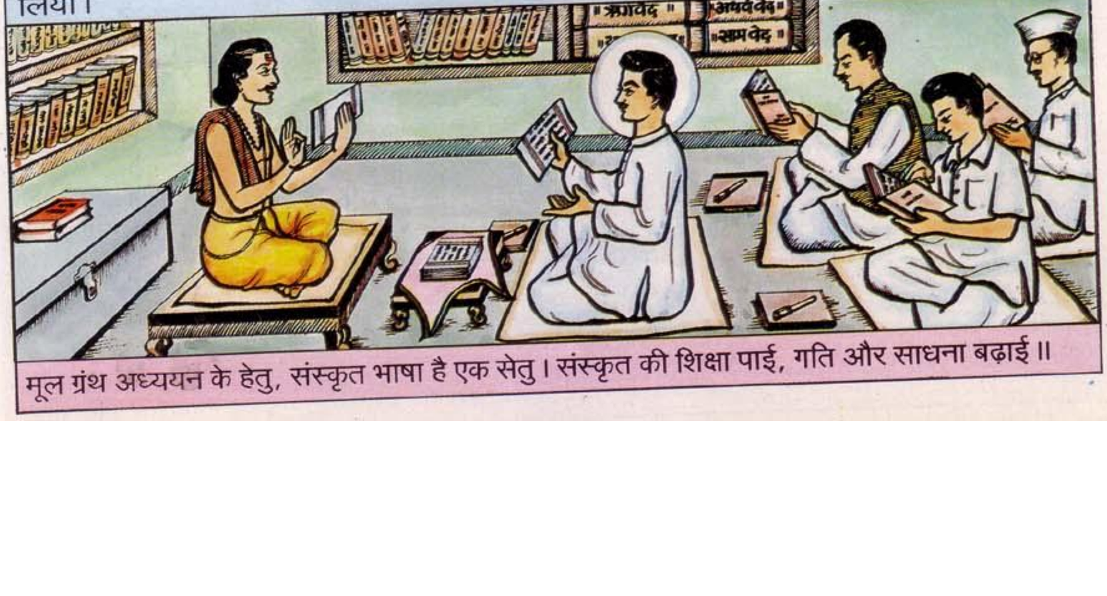
घर में लाये आजमाये गुर, बारात ले पहुँचे आदिपुर;

बारात शादी करके अहमदाबाद वापस आई। गुणवती बहू को ससुराल में लक्ष्मी कहकर बुलाने लगे।

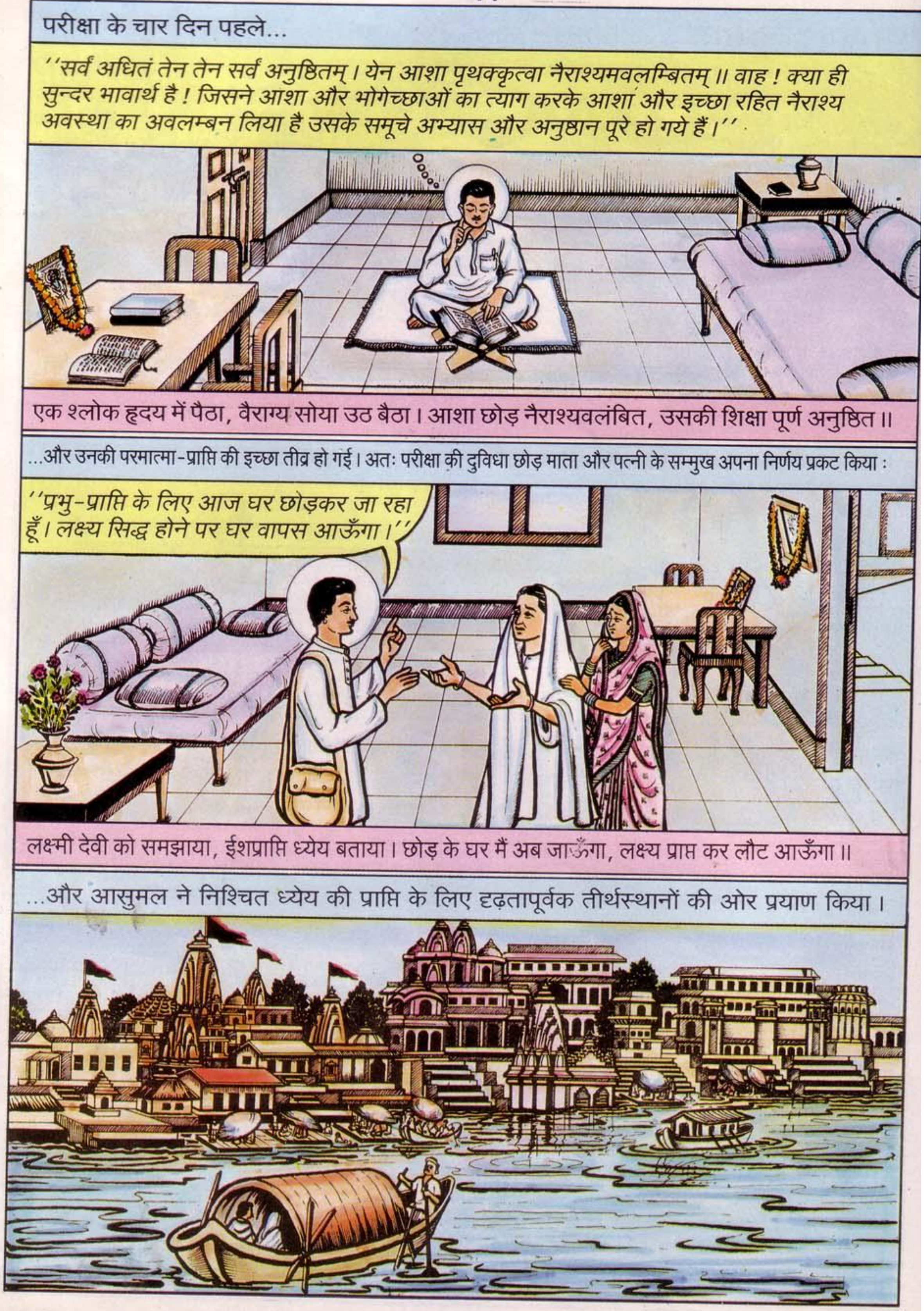


विवाह हुआ पर मन दृढ़ाया, भगत ने पत्नी को समझाया। अपना व्यवहार होगा ऐसे, जल में कमल रहता है जैसे ॥
सांसारिक व्योहार तब होगा, जब मुझे साक्षात्कार होगा। साथ रहे ज्यूँ आत्माकाया, साथ रहे वैरागी माया ॥
अनश्वर हूँ मैं जानता, सतचित हूँ आनन्द। स्थिति में जीने लगूँ, होवे परमानन्द ॥

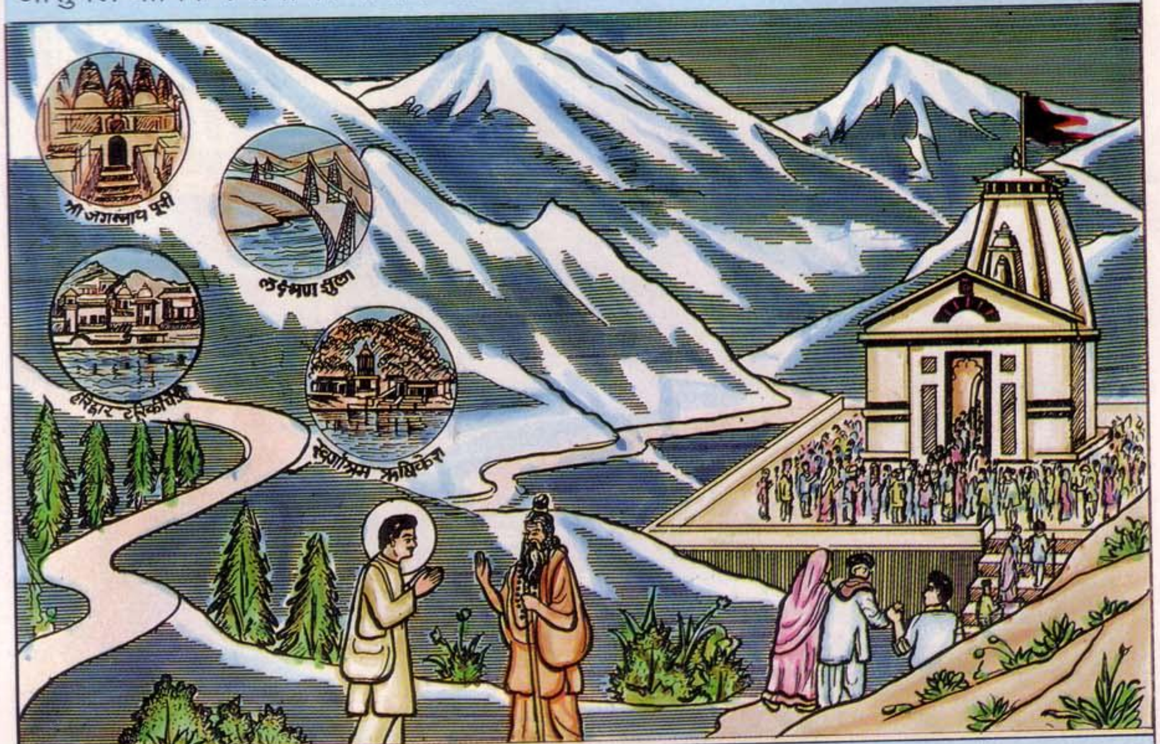
वैरागी आसुमल ने अपनी साधना को गति मिले इसके लिए पाठशाला में संस्कृत का अध्ययन शुरू किया। पत्नी ब्रह्मचर्यव्रत में से विचलित न करे इसलिए वे रात्रिनिवास पाठशाला में ही करने लगे। सच्ची लगन एवं ब्रह्मचर्य पालन की शक्ति से मात्र दस महीनों में ही उन्होंने खासा अध्ययन कर लिया।



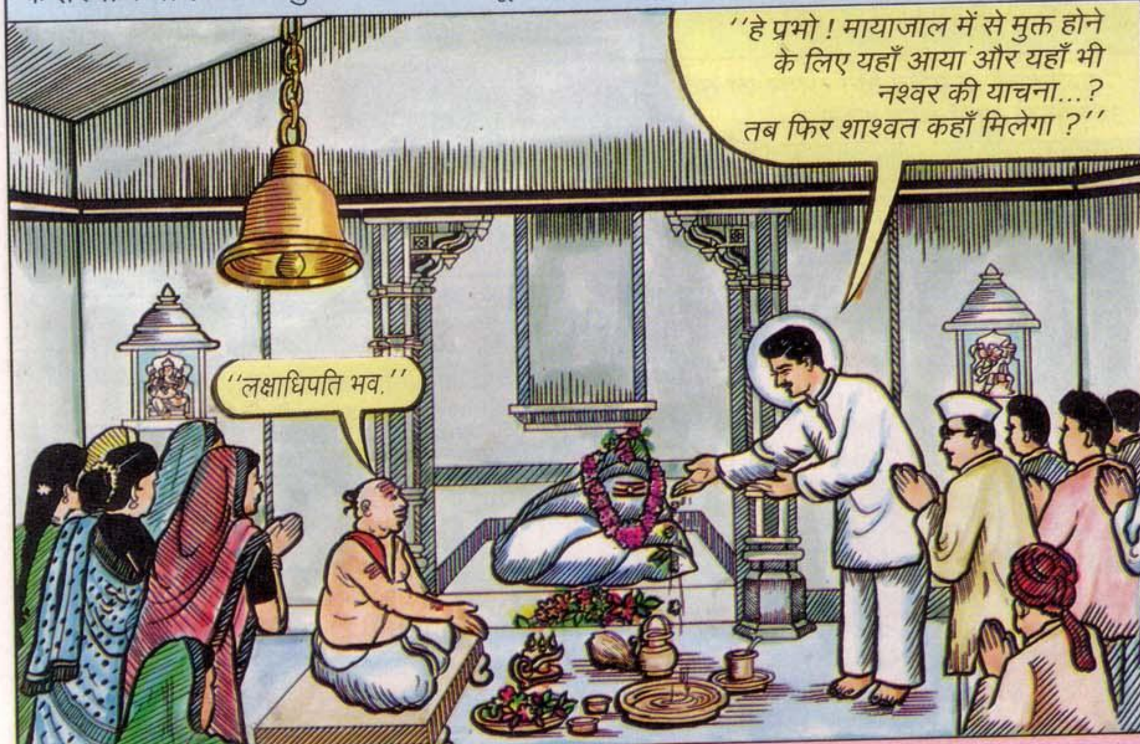
मूल ग्रंथ अध्ययन के हेतु, संस्कृत भाषा है एक सेतु। संस्कृत की शिक्षा पाई, गति और साधना बढ़ाई ॥


परीक्षा के चार दिन पहले...
''सर्वं अधितं तेन तेन सर्वं अनुष्ठितम् । येन आशा पृथक्कृत्वा नैराश्यमवलम्बितम् ॥ वाह ! क्या ही सुन्दर भावार्थ है ! जिसने आशा और भोगेच्छाओं का त्याग करके आशा और इच्छा रहित नैराश्य अवस्था का अवलम्बन लिया है उसके समूचे अभ्यास और अनुष्ठान पूरे हो गये हैं ।''
एक श्लोक हृदय में पैठा, वैराग्य सोया उठ बैठा । आशा छोड़ नैराश्यवलंबित, उसकी शिक्षा पूर्ण अनुष्ठित ॥
...और उनकी परमात्मा-प्राप्ति की इच्छा तीव्र हो गई । अतः परीक्षा की दुविधा छोड़ माता और पत्नी के सम्मुख अपना निर्णय प्रकट किया :
''प्रभु-प्राप्ति के लिए आज घर छोड़कर जा रहा हूँ । लक्ष्य सिद्ध होने पर घर वापस आऊँगा ।''
लक्ष्मी देवी को समझाया, ईशप्राप्ति ध्येय बताया । छोड़ के घर मैं अब जाऊँगा, लक्ष्य प्राप्त कर लौट आऊँगा ॥
...और आसुमल ने निश्चित ध्येय की प्राप्ति के लिए दृढ़तापूर्वक तीर्थस्थानों की ओर प्रयाण किया ।

आसुमल धार्मिक स्थानों की यात्रा करते करते केदारनाथ आये।

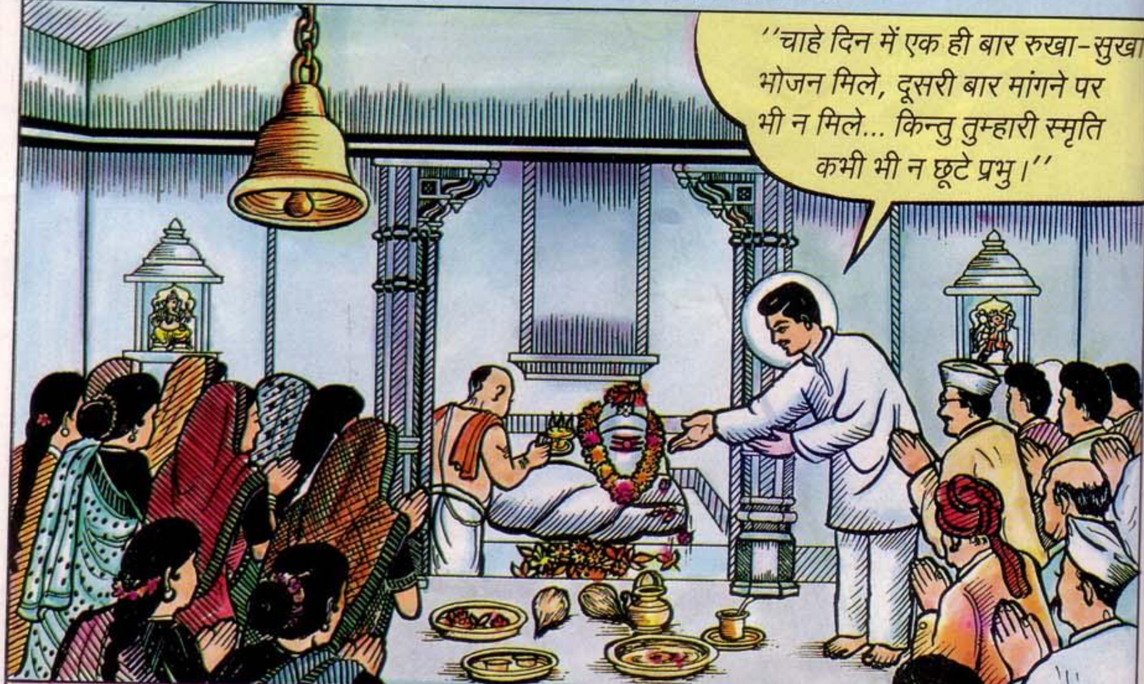


केदारनाथ मंदिर में आसुमल ने मंदिर के पूजारी के पास संकल्प कराया तब...



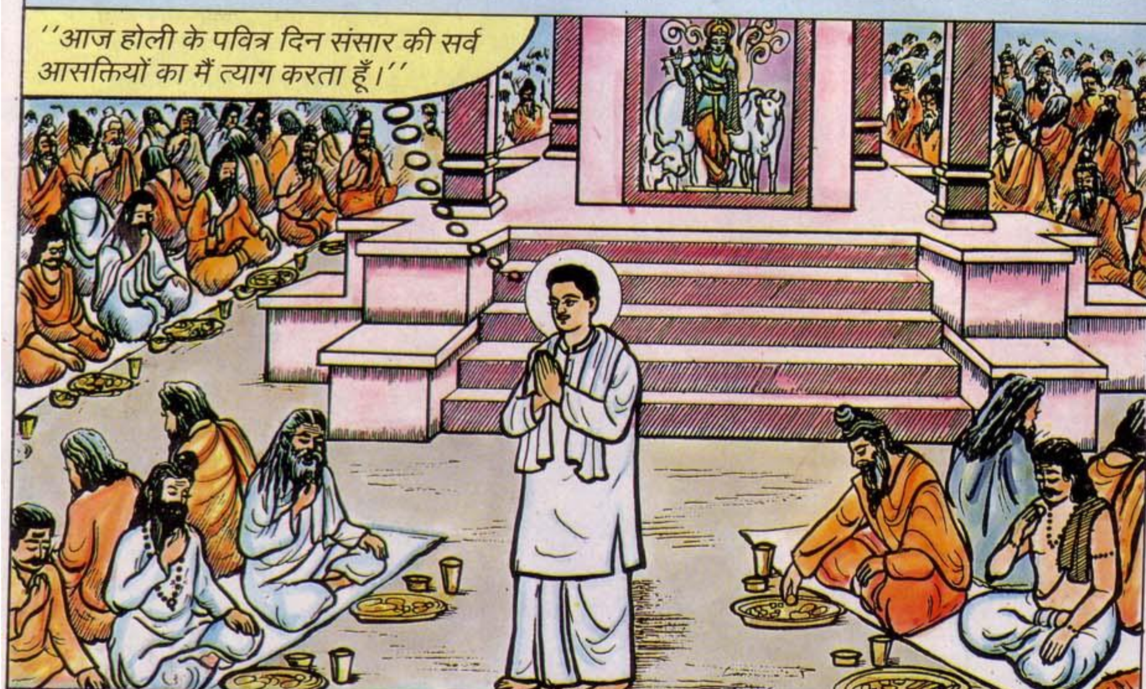
केदारनाथ के दर्शन पाये, लक्षाधिपति आशिष पाये।

आसुमल ने पूजारी के पास पुनः पूजा कराकर स्वयं ने संकल्प किया :



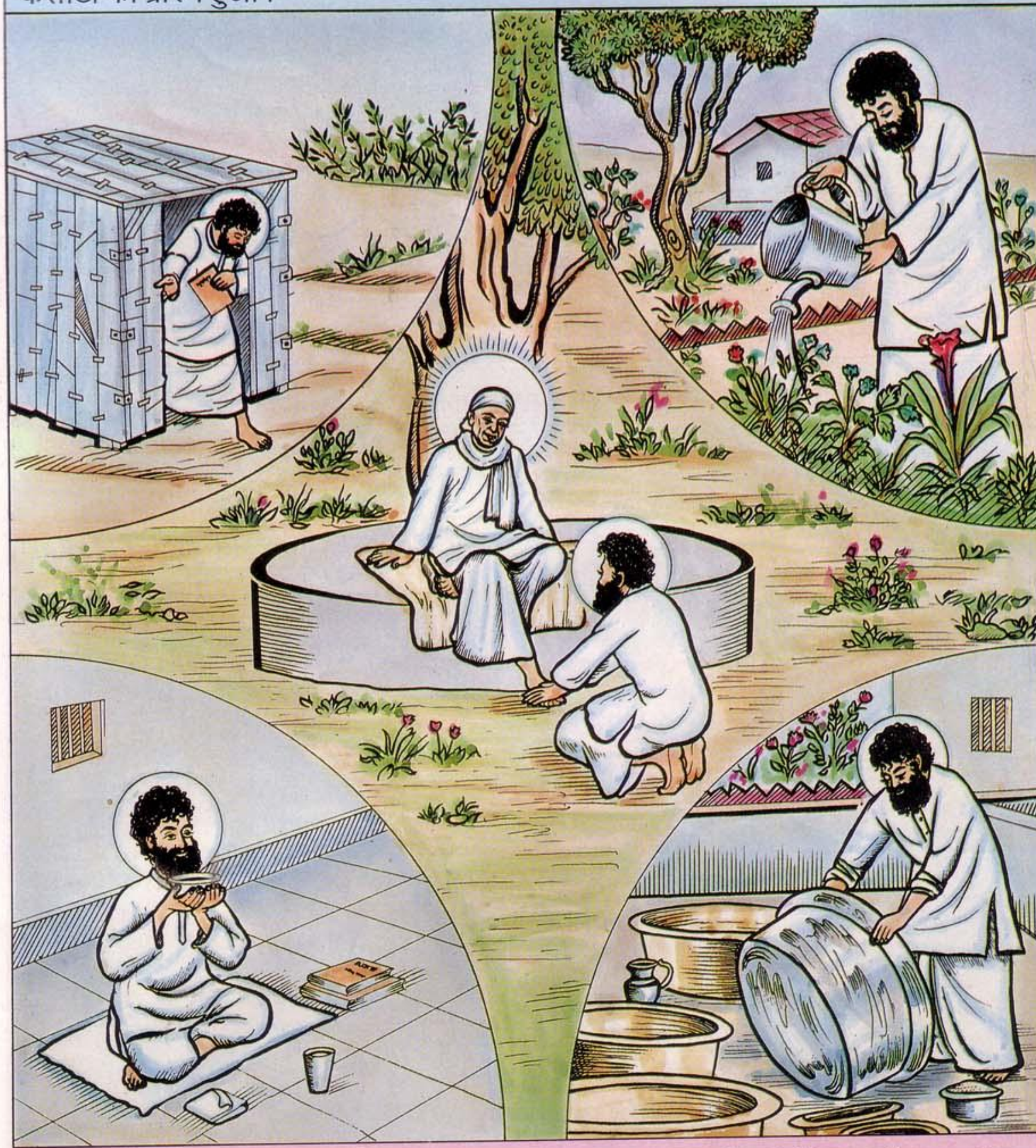
पुनि पूजा पुनः संकल्पाये, ईश प्राप्ति आशिष पाये ॥

'जीवन का बलिदान देकर भी अपने लक्ष्य को सिद्ध करूँगा।' ऐसा दृढ़ निश्चय करके आसुमल श्रीकृष्ण के लीलास्थल वृंदावन में पधारे। वहाँ अपनी पूंजी में से दरिद्रनारायणों को भोजन कराया।



आये कृष्ण लीलास्थली में, वृन्दावन की कुंज गलिन में। कृष्ण ने मन में ऐसा ढाला, वे जा पहुँचे नैनिताला ॥

श्रीकृष्ण की प्रेरणा से आसुमल बची हुई रकम के साथ वृंदावन से निकलकर नैनीताल के अरण्य में स्थित स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज के आश्रम में पहुँच गये। पूज्यपाद लीलाशाहजी महाराज के पास रहना यह भी एक प्रकार की अग्निपरीक्षा थी। आश्रम में आसुमल को ४० दिन तक गुरुदर्शन की प्रतीक्षा करनी पड़ी। भोजन में मात्र मूंग की दाल लेते। साढ़े चार फीट के छोटे-से कमरे में सोते। आश्रम के सभी सेवाकार्य उन्होंने अपने ऊपर ले लिये। आसुमल की कसौटी का प्रारंभ हुआ।



वहाँ थे श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठित, स्वामी लीलाशाह प्रतिष्ठित। भीतर तरल थे बाहर कठोरा, निर्विकल्प ज्यूँ कागज कोरा॥
पूर्ण स्वतंत्र परम उपकारी, ब्रह्मस्थित आत्म-साक्षात्कारी।

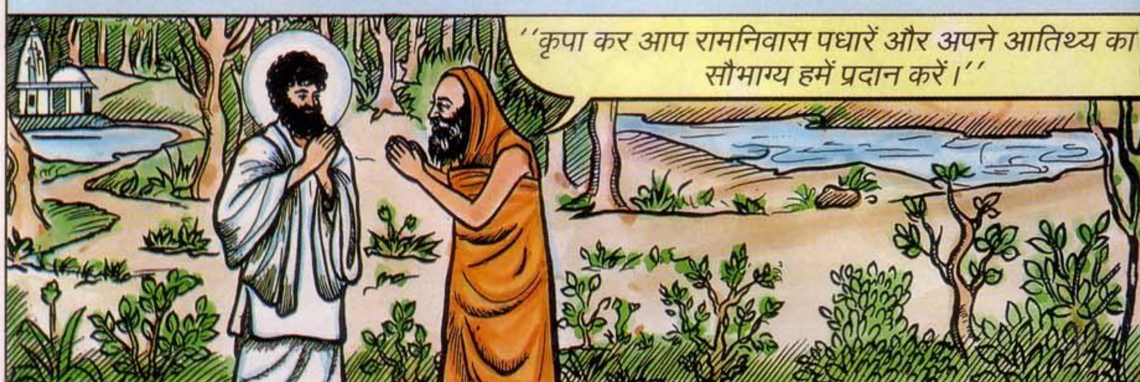
ईशकृपा बिन गुरु नहीं, गुरु बिना नहीं ज्ञान। ज्ञान बिना आत्मा नहीं, गावहिं वेद पुरान॥

सद्गुरु ने आसुमल की तेजस्वी मुखमुद्रा और आंतरिक दृढ़ता देखकर उनका पूर्व जीवन जान लिया। सद्गुरु को अपना आत्मानुभव उँडेलने के लिये योग्य पात्र मिल गया। शुद्ध कंचन की तरह अधिक तपाने के लिये गुरुदेव ने दूसरे ३० दिन तक आसुमल की विविध कसौटियाँ करके अपने पास बुलाये :

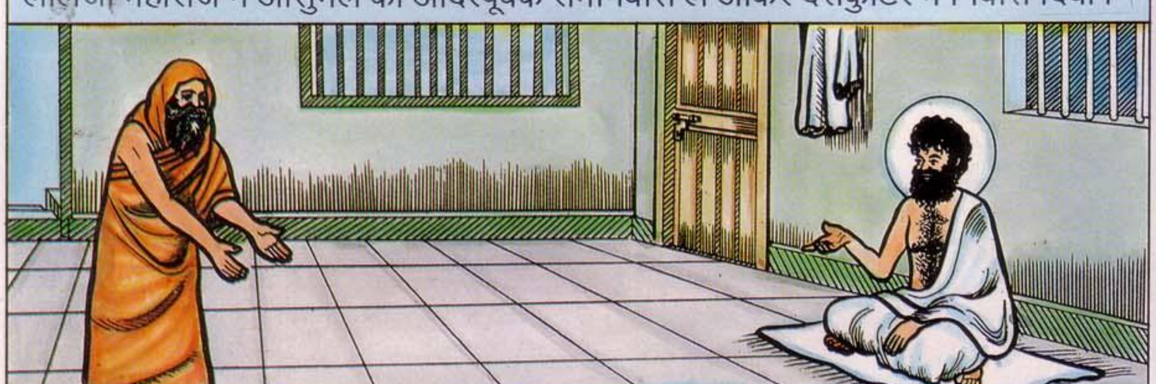


जानने को साधक की कोटि, सत्तर दिन तक हुई कसौटी। कंचन को अग्नि में तपाया, गुरुने आसुमल बुलवाया॥
कहा गृहस्थ हो कर्म करना, ध्यान भजन घर पर ही करना। आज्ञा मानी घर पर आये, पक्ष में मोटी कोरल धाये॥

आसुमल घर वापस आये; इससे परिवार की प्रसन्नता का पार न रहा। किन्तु तेरह दिन बाद फिर से उनके मन में वैराग्य की बाढ़ उमड़ी और वे मोटी कोरल के नर्मदा तट पर पहुँच गये। यहाँ आसुमल की भक्ति-भावना से आकर्षित होकर संत लालजी महाराज आ पहुँचे।



लालजी महाराज ने आसुमल को आदरपूर्वक रामनिवास ले आकर दत्तकुटिर में निवास दिया।



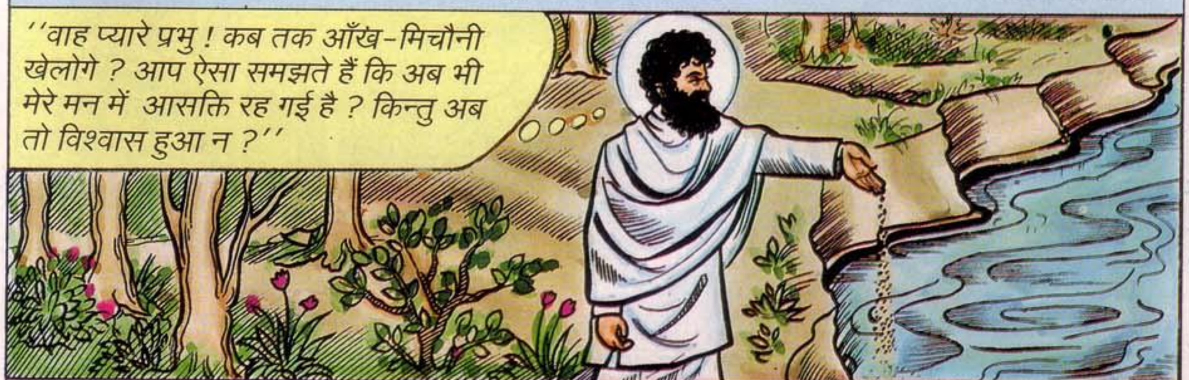
नर्मदा तट पर ध्यान लगाये, लालजी महाराज आकर्षाये। सप्रेम शीलस्वामी पहँ धाये, दत्तकुटीर में साग्रह लाये॥

आसुमल ने इस पवित्र स्थान में चालीस दिन के अनुष्ठान का प्रारंभ किया।



उमड़ा प्रभु प्रेम का चसका, अनुष्ठान चालीस दिवस का।
मरे छः शत्रु स्थिति पाई, ब्रह्मनिष्ठता सहज समाई। शुभाशुभ सम रोना गाना, ग्रीष्म ठंड मान औ' अपमाना॥
तृप्त हो खाना भूख अरु प्यास, महल औ' कुटिया आसनिरास। भक्तियोग ज्ञान अभ्यासी, हुए समान मगहर औ' काशी॥
भावहि कारण ईस है, न स्वर्ण काष्ठ पाषान। सत चित आनंदरूप है, व्यापक है भगवान॥
ब्रह्मेशान जनार्दन, सारद सेस गणेश। निराकार साकार है, है सर्वत्र भवेश॥

एक दिन नर्मदा तट पर प्रभु-प्रेम में उन्मत्त बने आसुमल जेब में से चने निकालकर नर्मदा के प्रवाह में समर्पित करते हैं।



हुए आसुमल ब्रह्माभ्यासी, जन्म अनेकों लागे बासी। दूर हो गई आधि व्याधि, सिद्ध हो गई सहज समाधि॥

यों प्रभु-चिन्तन में तल्लीन थे तब वहाँ रात में वर्षा के साथ आंधी आने लगी।



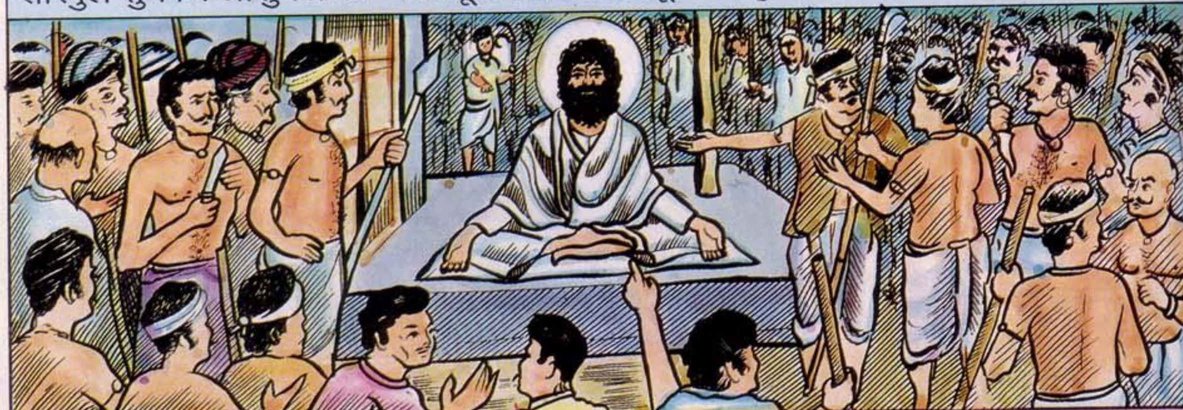
इक रात नदी तट मन आकर्षा, आई जोर से आँधी वर्षा।

आसुमल वहाँ से उठकर चल पड़े। थोड़ी दूर स्थित मछुओं की झोंपड़ी के एक बंद दरवाजे के पास बरामदे में आकर आसुमल ध्यानस्थ अवस्था में बैठ गये।



बंद मकान बरामदा खाली, बैठे वहीं समाधि लगा ली ॥

शोरगुल सुनकर आसुमल का ध्यान टूट गया। अभयमूर्ति आसुमल शान्त और स्वस्थ थे।



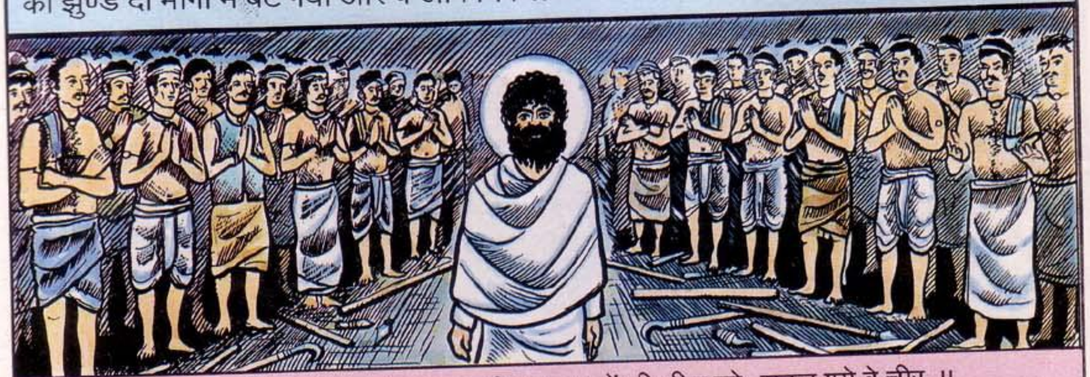
देखा किसीने सोचा डाकू लाये लाठी भाला चाकू। दौड़े चीखे शोर मच गया, टूटी समाधि ध्यान खिंच गया ॥

वनराज केसरी की अदा से आसुमल खड़े हुए और लोगों के झुण्ड पर वेधक दृष्टि डालते हुए देखते रहे।



साधक उठा थे बिखरे केसा, राग द्वेष ना किंचित लेषा। सरल लोगों ने साधु माना, हत्यारों ने काल हि जाना ॥
भैरव देख दुष्ट घबराये, पहलवान ज्यूँ मल्ल हि पाये। कामीजनों ने आशिक माना, साधुजन कीन्हें परनामा ॥

आसुमल शांतचित्त, निर्भयतापूर्वक, दृढ़ निश्चयी बनकर आगे बढ़ने लगे। उनको देखकर लोंगों का झुण्ड दो मार्गों में बँट गया और वे आगे निकल गये।



एक दृष्टि देखे सभी, चले शांत गम्भीर। सशस्त्रों की भीड़ को, सहज गये वे चीर ॥

आसुमल मोटी कोरल में हैं यह जानकर महँगीबा और लक्ष्मीदेवी मोटी कोरल में आये।



माता आई धर्म की सेवी, साथ में पत्नी लक्ष्मीदेवी। दोनों फूट फूट के रोई, रुदन देख करुणा भी रोई ॥
संत लालजी हृदय पसीजा, हर दर्शक आँसू में भीजा। कहा सभी ने आप जाइयो, आसुमल बोले कि भाइयो ॥
चालीस दिवस हुआ न पूरा, अनुष्ठान है मेरा अधूरा। आसुमल ने छोड़ी तितिक्षा, माँ पत्नी ने की परतिक्षा ॥

आखिर ४० दिन के अनुष्ठान की पूर्णाहुति हुई। आसुमल की विदा के समय सारा गाँव और स्वयं लालजी महाराज भी विदा करने आये। सबकी आँखों में अश्रु... हृदय में विरह का शोक था।



जिस दिन गाँव से हुई विदाई, जार जार रोये लोग-लुगाई।

मियागाम स्टेशन पर अहमदाबाद जानेवाली चलती गाड़ी में से उतरकर आसुमल बम्बई जानेवाली गाड़ी में जाने के लिए दौड़े। माताजी चिल्लाती रहीं... धर्मपत्नी आँसू बहाती रहीं... किन्तु वैरागी आसुमल गुरु के यहाँ जाने के लिये निकल ही पड़े। वैराग्य अडिग न हो तो किस साधक को कुटुम्बी लोग मोहपाश के छेदन का ज्ञान सिद्ध होने दें ? धन्य है ज्ञान और वैराग्य ! हजारों जन्म की पत्नी और माताएँ जो न दे सकें वैसा प्राप्त करने के लिये गुरु की शरण तो दृढ़ पुरुष ही सेवन कर सकता है न... ! प्रभु-दर्शन की अनुभूति कर सकता है न...!



अहमदाबाद को हुए रवाना, मियाँ गाँव से किया पयाना।

आसुमल सद्गुरु के श्रीचरणों में आ पहुँचे।



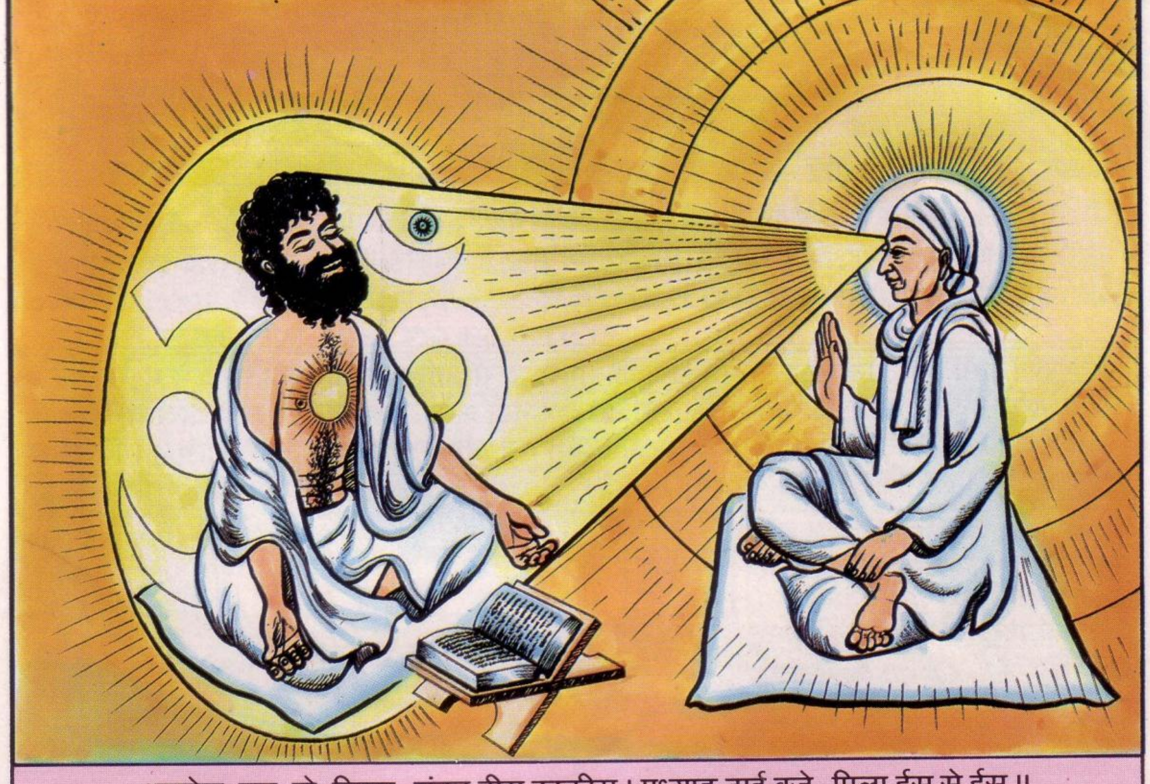
बम्बई गये गुरु की चाह, मिले वहीं पै लीलाशाह ।

गुरुआज्ञा-पालन एवं साधना की निष्ठा फलीभूत होने लगी। अपने निजात्म-स्वरूप की झाँकी होने की घड़ियाँ समीप आ पहुँची। जन्म जन्म का भूखा प्यासा साधक आज गुरुकृपा-प्रसाद प्राप्त कर चुका।



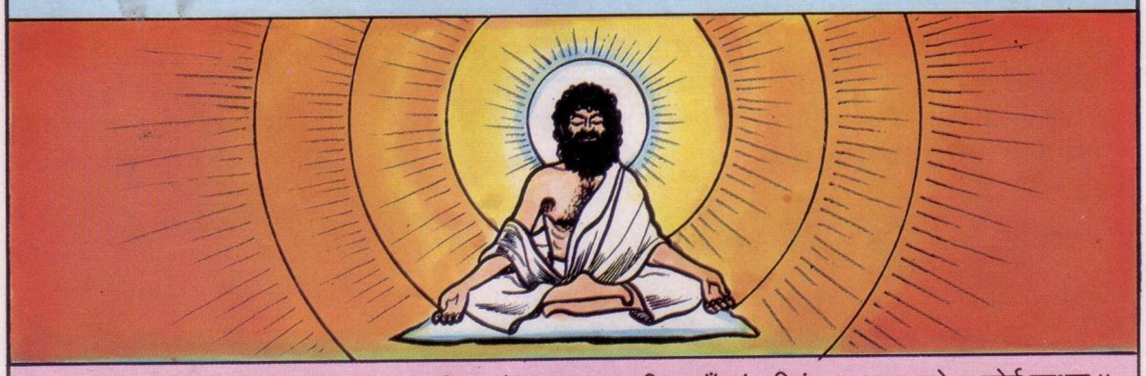
परमपिता ने पुत्र को देखा, सूर्य ने घटजल में पेखा। घटक तोड़ जल जल में मिलाया, जलप्रकाश आकाश में छाया॥
निज स्वरूप का ज्ञान दृढ़ाया, ढ़ाई दिवस होश न आया।

संवत २०२१ की आश्विन मास की शुक्लपक्ष की द्वितीया के दिन गुरु की कृपादृष्टि और संकल्प मात्र से आसुमल आज अपने निज स्वरूप में निमग्न हुए। जन्म जन्म के पाप-पुण्य, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य को त्यागकर वे स्वात्मानंद में स्थिर हुए। ऐसा साधक सिद्ध बनकर ऐसे आनन्दसागर में गोता लगाता है कि फिर अपने सुख के लिए संसार की ओर निगाह दौड़ाने की उसे आवश्यकता ही नहीं रहती।



आसोज सुद दो दिवस, संवत् बीस इक्कीस। मध्याह्न ढ़ाई बजे, मिला ईस से ईस॥
देह सभी मिथ्या हुई, जगत हुआ निस्सार। हुआ आत्मा से तभी, अपना साक्षात्कार॥

आत्म-साक्षात्कार के बाद ऐसी ही उन्मत्त अवस्था में आसुमलजी ढ़ाई दिन तक स्थित रहे।
'आ गया आना जहाँ पहुँचा वहाँ जाना जहाँ। अब नहीं आना न जाना काम क्या बाकी रहा ?'



परम स्वतन्त्र पुरुष दर्शाया, जीव गया और शिव को पाया। जान लिया हूँ शांत निरंजन, लागू मुझे न कोई बन्धन॥
यह जगत सारा है नश्वर, मैं ही शाश्वत एक अनश्वर।

आत्म-साक्षात्कार होने के बाद आसुमलजी सभी में भगवद्-दर्शन करने लगे।



दीद हैं दो पर दृष्टि एक है, लघु गुरु में वही एक है। सर्वत्र एक किसे बतलाये, सर्व व्याप्त कहाँ आये जाये ॥
अनंत शक्तिवाला अविनाशी, रिद्धि सिद्धि उसकी दासी। सारा ही ब्रह्माण्ड पसारा, चले उसकी इच्छानुसारा ॥
यदि वह संकल्प चलाये, मुर्दा भी जीवित हो जाये।

सद्गुरु स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज के सान्निध्य में आसुमलजी निजानन्द में मस्त होकर रहने लगे। इच्छा, लोभ या मोह उन्हें विचलित कर नहीं सके। गुरुदेव का समग्र खजाना उन्होंने पचा लिया। गुरुदेव की सही बिरासत उन्होंने प्राप्त कर ली। गुरुदेव को अपने ज्ञान की बिरासत संभालनेवाला सत्शिष्य मिल चुका था।



ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर, कार्य रहे ना शेष। मोह कभी ना ठग सके, इच्छा नहीं लवलेश ॥
पूर्ण गुरु किरपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान। आसुमल से हो गये, साईं आसाराम ॥

अब आसुमलजी संत श्री आसारामजी बने। सोते-जागते, खाते-पीते ब्रह्मानन्द में मस्त रहने लगे। उन्हें संसार का मोह न था। संसार की किसी भी घटना में उन्हें सत्यबुद्धि न थी। 'निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखक्षमी' ऐसी पराभक्ति को वे प्राप्त हुए। अपरा भक्ति में तो करोड़ों लोग हो सकते हैं। पराभक्ति याने पूर्ण प्रभुभक्ति। जिसमें प्रभु का कभी वियोग ही नहीं होता यही पराभक्ति। 'मद्भक्तिं लभते पराम्...।'



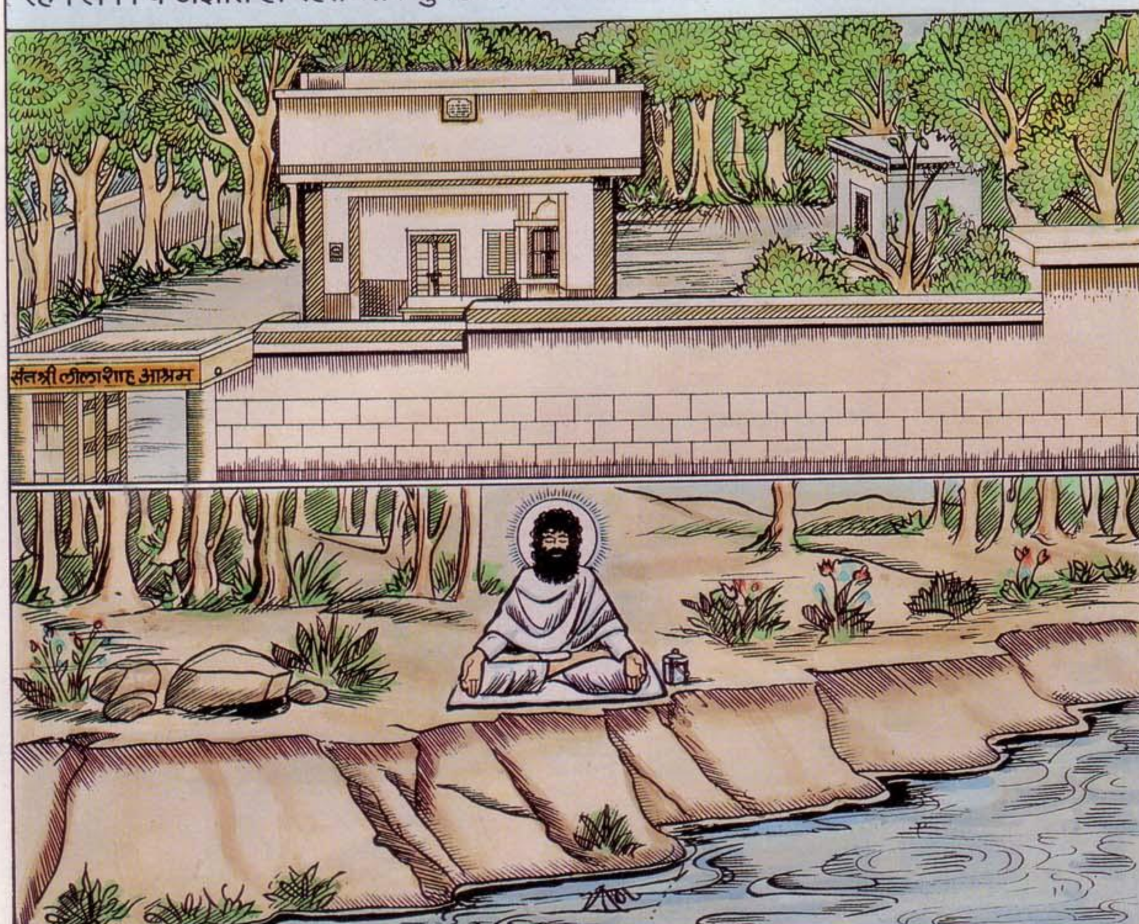
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति चेते, ब्रह्मानन्द का आनन्द लेते। खाते पीते मौन या कहते, ब्रह्मानन्द मस्ती में रहते ॥

एक दिन गुरुजी और आसारामजी :



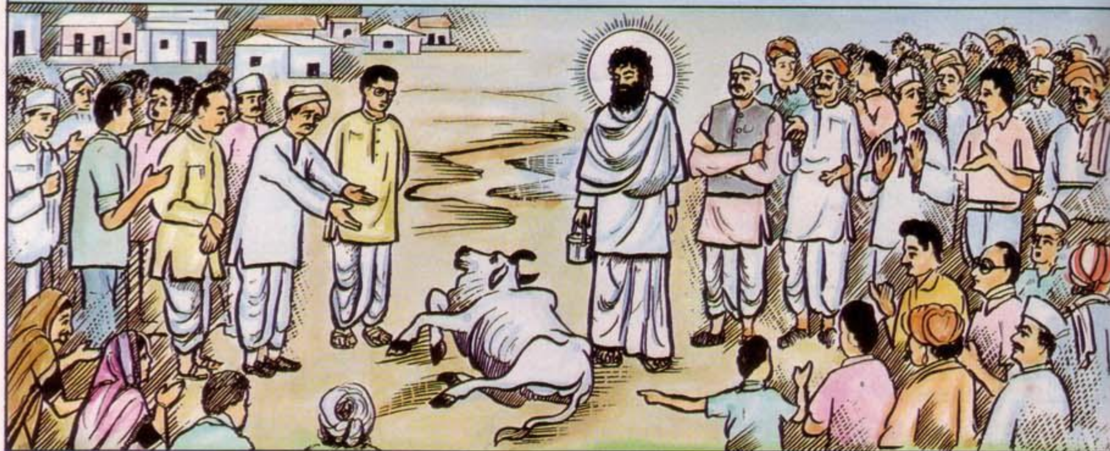
रहो गृहस्थ गुरु का आदेश, गृहस्थ साधु करो उपदेश।

गुरुआज्ञा का पालन करके पूज्यश्री आसारामजी गुजरात में पालनपुर के पास डीसा के आश्रम में रहने लगे। वे अज्ञात ही रहते और सुबह शाम बनास नदी के तट पर ध्यान साधना के लिए जाते।



किये गुरु ने वारे न्यारे, गुजरात डीसा गाँव पधारे।

एक दिन पूज्यश्री शाम के समय नदी से वापस आ रहे थे। आश्रम के दरवाजे से थोड़ी दूर एक गाय मृत अवस्था में पड़ी थी। लोगों की भीड़ जमा थी।



पूज्यश्री ने समूह में से एक सज्जन को अपने पास बुलाया :



उस सज्जन ने गाय पर पानी छिड़का। गाय खड़ी होकर चलने लगी। सभी लोग इस चमत्कार को देखते रहे। इस चमत्कार की बात पवनगति की तरह सर्वत्र फैल गई।



मृत गाय दिया जीवन दाना, तब से लोगों ने पहचाना।

पूज्यश्री डीसा के निवास दरमियान कभी कभी गाँव में भिक्षा माँगने भी जाते। एक बार किसी एक महिला के द्वार पर उन्होंने अलख जगाया। उस महिला को मालूम न था कि विश्वंभर के साथ विहार करनेवाले आज मेरे द्वार पर 'नारायण हरि' कर रहे हैं।



मान-अपमान से परे ऐसे पूज्यश्री आगे चल पड़े। वह महिला तो पूज्यश्री की समता देखकर दंग रह गई।



उसके बाद तो पूज्यश्री को भिक्षा कराने के लिए लोग थाल परोसकर गलियों के नाके के आगे पूज्यश्री के आगमन की राह देखते खड़े रहते... किन्तु पूज्यश्री वहाँ से दूसरी ही दिशा में मुड़ जाते।



द्वार पै कहते नारायण हरि, लेने जाते कभी मधुकरि।

डीसा के एक सेठ चंदीराम पूज्य लीलाशाहजी बापू के समाचार पूछने पूज्यश्री के पास आश्रम में आये। उनकी दो पत्नियों की मृत्यु हो चुकी थी। अब वे तीसरी बार शादी करने...अठारह वर्ष की एक युवती के साथ विवाह करने के लिए आशीर्वाद लेने आये थे।



पूज्यश्री की अलौकिक वाणी का प्रभाव पड़ गया। सेठ के मन में से काम-विकार का कीड़ा दूर हो गया। फिर वह ईश्वरमय जीवन जीने लगे और पूज्यश्री के सान्निध्य में रहकर साधना करने लगे।



शिवलाल नाम के एक गृहस्थ डीसा में होटल चलाते थे। एक बार उनके मित्र उनसे मिले और कहा :

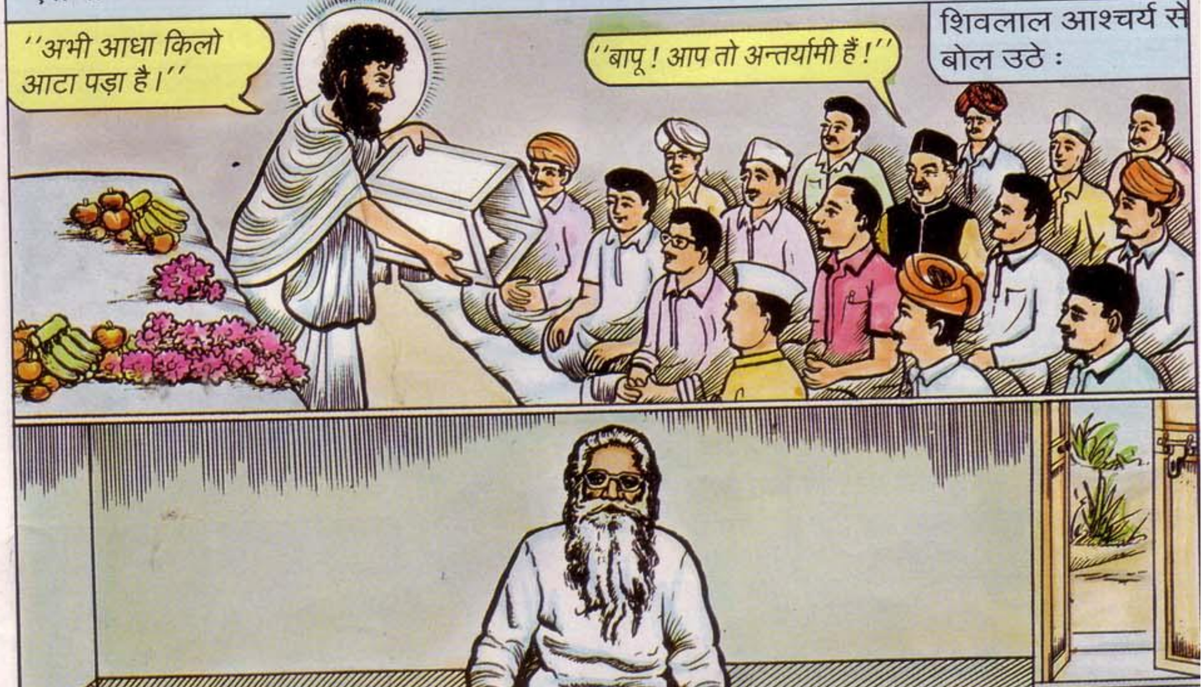


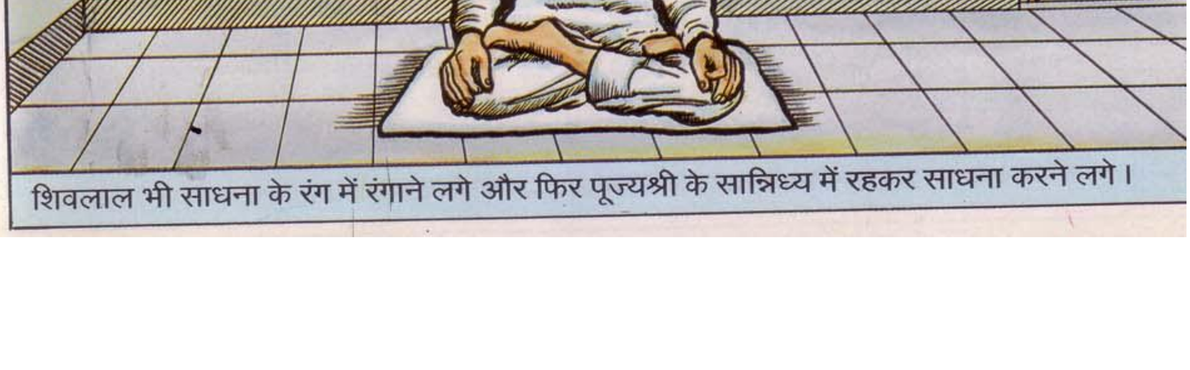
...और मित्र की प्रसादवाली बात सुनकर पूज्यश्री के दर्शन के लिए जाने का निश्चय किया।

शिवलाल रास्ते पर जाते हुए विचार करने लगेः 'सुना है कि ये संत तो कई दिनों तक कुटीर से बाहर निकलते ही नहीं हैं। तब वे अन्दर क्या खाते पीते होगें ?' आश्रम में पहुँचकर वे पूज्यश्री के प्रवचन में बैठे।



सदैव प्रसन्न ऐसे पूज्यश्री किसीको अपने विषय में चिन्तित नहीं होने देते थे। किसी श्रोता के मन में उत्पन्न हुए प्रश्न को वे सहज ही में जान लेते और सत्संग में उसे सम्मिलित कर लेते। 'अनन्याश्चिन्तयन्तो मां... योगक्षेमं वहाम्यहम्...' गीता के इस श्लोक के विषय में बोलने से पूर्व पूज्यश्री की ऐसी निराली भूमिका प्रकट होती। गीता, वेदान्त और तत्त्वज्ञान के गहन श्लोक भी पूज्यश्री ऐसे सरलता से समझाते और यह सब श्रोताओं को आत्मसात् हो जाता।



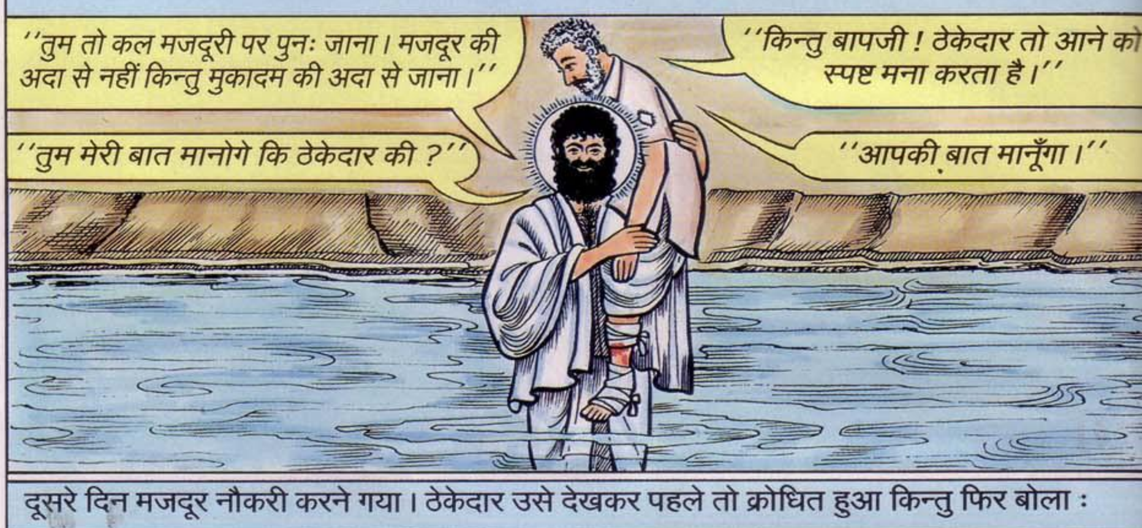


शिवलाल भी साधना के रंग में रंगाने लगे और फिर पूज्यश्री के सान्निध्य में रहकर साधना करने लगे।

एक दिन नदी किनारे पूज्यश्री ने एक लंगड़े मजदूर को देखा। पूज्यश्री ने दयाभाव से उससे पूछाः



पूज्यश्रीने उस नदी पार कराने के लिए अपने कंधे पर बिठाया। पानी में आगे चलते पूज्यश्रीने विचार किया: मैंने जिसे कंधे पर बिठाया उसका अकल्याण किस तरह देखा जाय ?' मन ही मन संकल्प करके मजदूर से कहा :

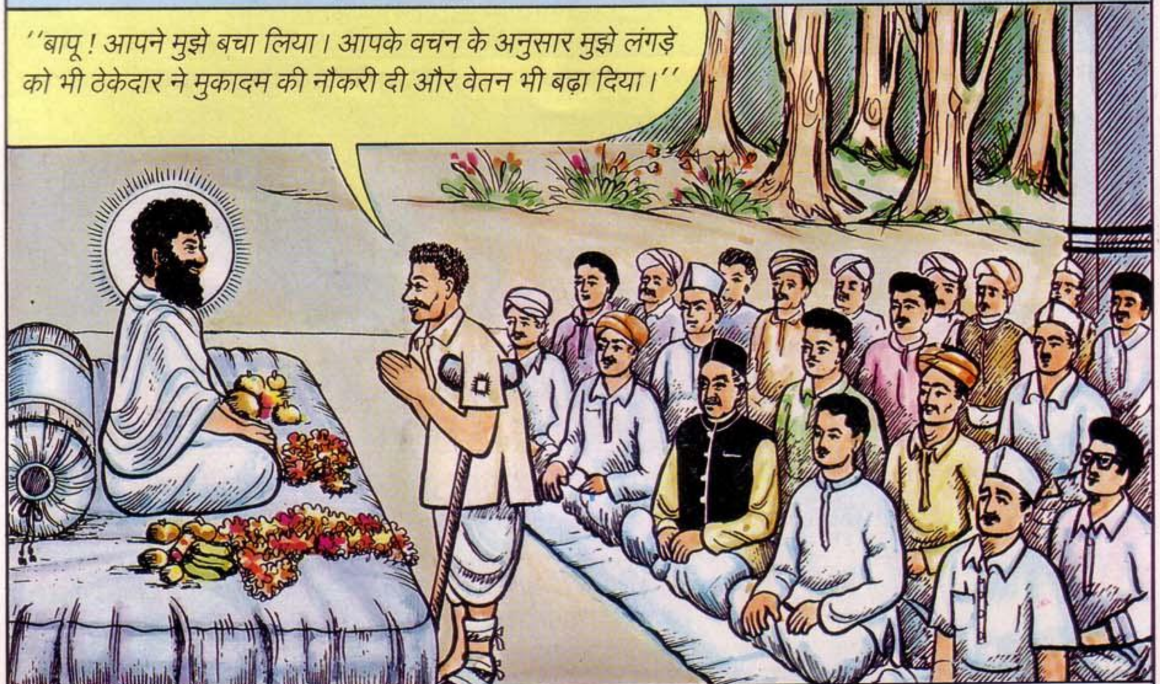


दूसरे दिन मजदूर नौकरी करने गया। ठेकेदार उसे देखकर पहले तो क्रोधित हुआ किन्तु फिर बोला :

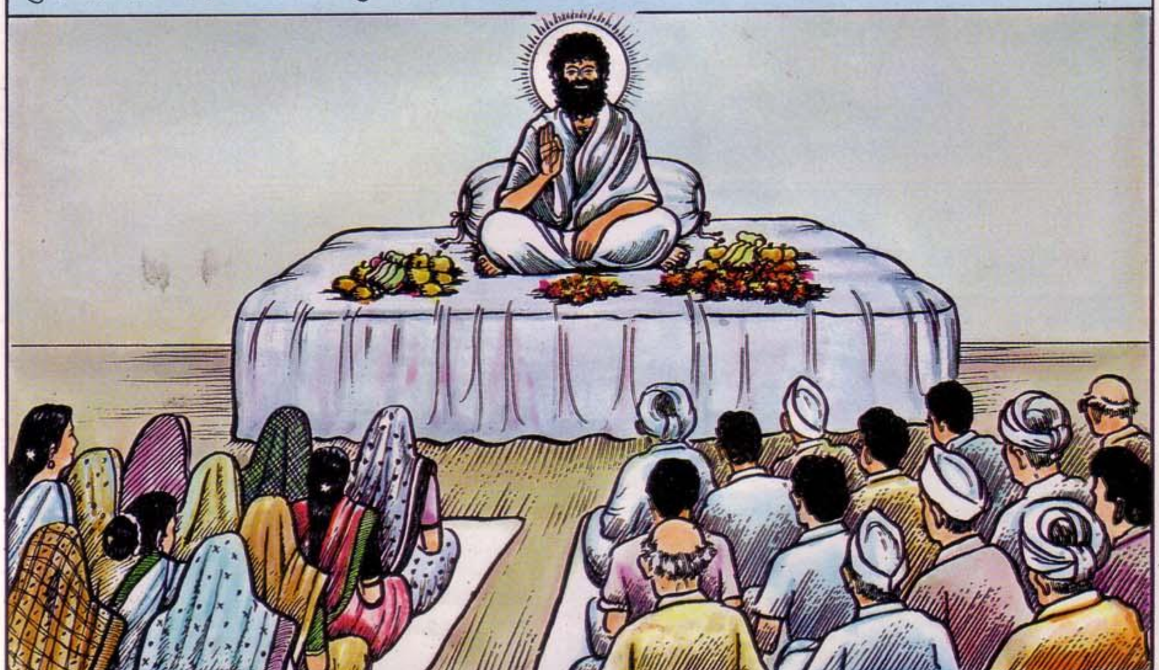


मजदूर तो मन ही मन पूज्यश्री की अपार करुणा को वन्दन कर रहा था।

दूसरे दिन यह लंगड़ा मजदूर आकर पूज्यश्री के चरणों में गिरा :



पूज्यश्री के सत्संग में कितने ही लोगों ने शराब, मांस, बीड़ी के व्यसन छोड़े। गलत वहम के स्थान पर लोगों की आत्मश्रद्धा जागृत होने लगी। दुःखी लोग सत्संग में आकर दुःख, शोक भूल जाते। सुखी लोग नश्वर सुख का मोह छोड़कर शाश्वत सुख-स्वरूप ईश्वर-साधना के मार्ग पर चलने लगते।



तब से वे सत्संग सुनाते, सभी आर्ती शांति पाते। जो आया उद्धार कर दिया, भक्त का बेड़ा पार कर दिया ॥
कितने मरणासन्न जिलाये, व्यसन माँस और मद्य छुड़ाये।

...किन्तु डीसा के लोग सही अर्थ में पूज्यश्री को पहचान न सके। एक दिन डीसा में सत्संग समा
होने के बाद पूज्यश्री ने सरल हृदय से विनोदी स्वभाव से लोगों से पूछा :

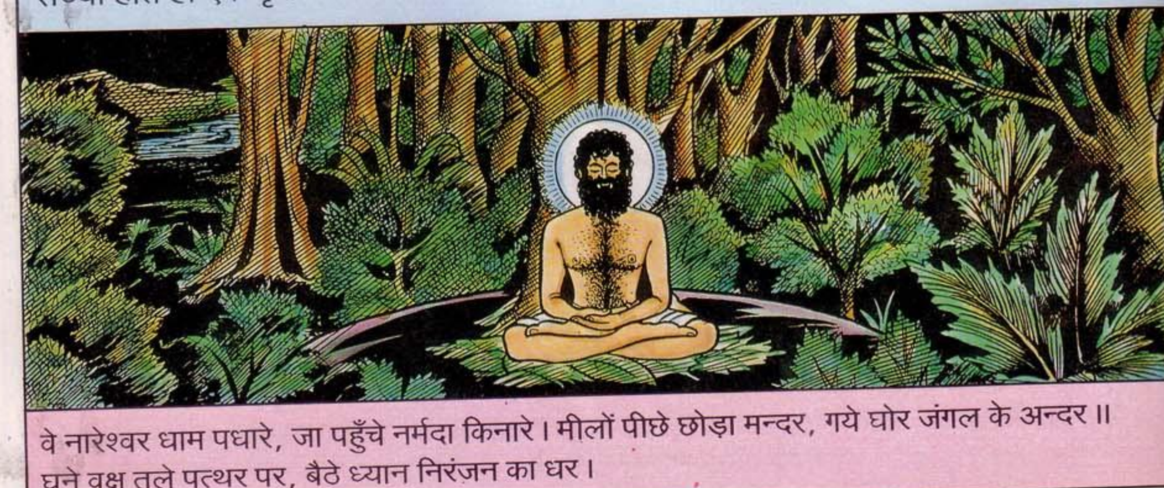


यह जवाब सुनकर पूज्यश्री कंधे पर से चद्दर उतारकर मात्र चड्डी पहने ही वहाँ से चलने के लिए उसी समय तैयार हुए। पूज्यश्री को मनाने के लिए लोगों ने उन्हें घेर लिया।



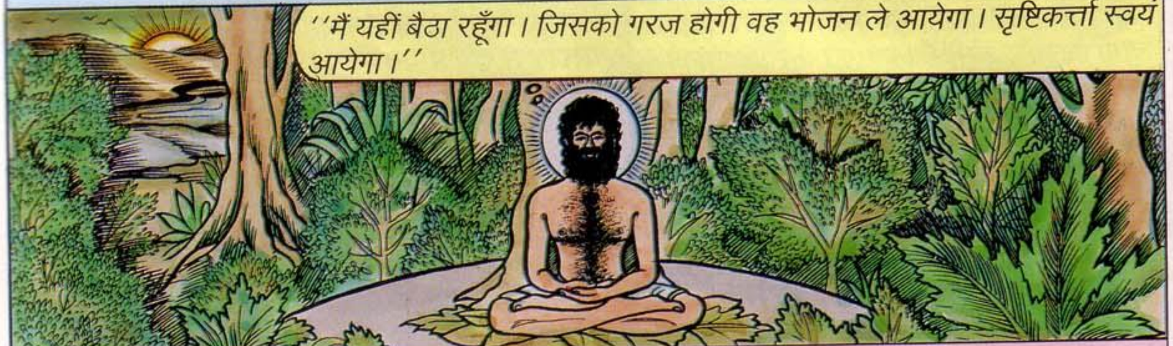
एक दिन मन उकता गया, किया डीसा से कूँच। आई मौज फकीर की, दिया झोंपड़ा फूँक ॥

पूज्यश्री अवधूती मस्ती में नर्मदा तट पर स्थित नारेश्वर धाम के पास घने जंगल में आ पहुँचे। संध्या होते ही एक वृक्ष के नीचे ओटले पर ध्यानमग्न होकर बैठ गये।



वे नारेश्वर धाम पधारे, जा पहुँचे नर्मदा किनारे। मीलों पीछे छोड़ा मन्दर, गये घोर जंगल के अन्दर ॥
घने वृक्ष तले पत्थर पर, बैठे ध्यान निरंजन का धर।

पूज्यश्री ने सारी रात परमात्मा के ध्यान में बिताई । सुबह सूर्योदय के समय समाधि खुली । नित्यक्रम पूर्ण करके निश्चिन्त अवस्था में बैठे । रात में तो उन्होंने कुछ भी खाया न था । अब उन्हें क्षुधा का एहसास होने लगा ।



रात गई प्रभात हो आंई, बाल रवि ने सूरत दिखाई । प्रातः पक्षी कोयल कूकन्ता, छूटा ध्यान उठे तब संता ॥
प्रातर्विधि निवृत्त हो आये, तब आभास क्षुधा का पाये । सोचा मैं न कहीं जाऊँगा, यहीं बैठकर अब खाऊँगा ॥
जिसको गरज होगी आयेगा, सृष्टिकर्त्ता खुद लायेगा ।

पूज्यश्री ने ऐसा निर्णय किया ही था कि कुछ ही देर में दो किसान उनके पास आते हुए दिखाई दिये । एक के हाथ में दूध और दूसरे के हाथ में फल थे ।



ज्यूँ ही मन विचार वे लाये, त्यूँ ही दो किसान वहाँ आये । दोनों सिर पर बाँधे साफा, खाद्यपेय लिये दोनों हाथा ॥
बोले जीवन सफल है आज, अर्घ्य स्वीकारो महाराज ।



बोले संत और पै जाओ, जो है तुम्हारा उसे खिलाओ । बोले किसान आपको देखा, स्वप्न में मार्ग रात को देखा ॥
हमारा न कोई संत है दूजा, आओ गाँव करें तुमरी पूजा ।

पूज्यश्री सोचने लगे कि निराकार ईश्वर साकार होकर लीला कर रहा है। उसीने इन लोगों को भेजा है ; ऐसा लगता है।



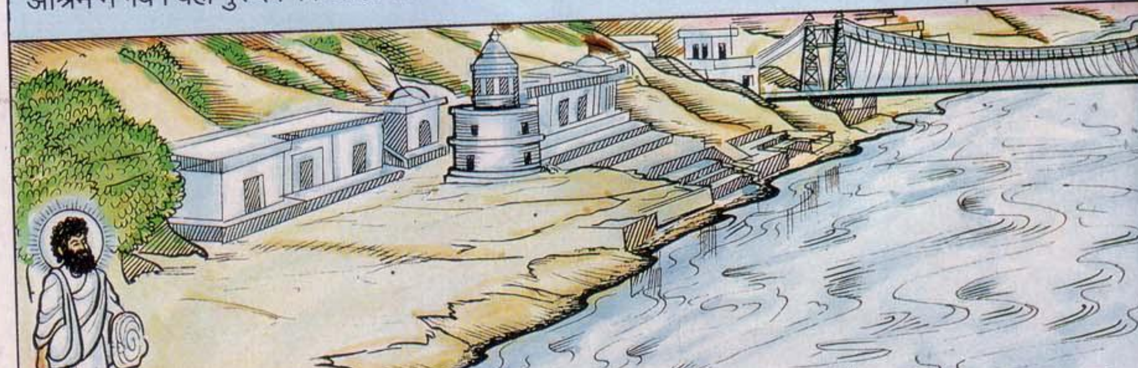
आसाराम तब मन में धारे, निराकार आधार हमारे।

किसान बात करके विदा हुए तब पूज्यश्री ने थोड़ा दूध और फल खाये। पूज्यश्री किसीके बन्धन में बँधें ऐसे न थे। वे तो थोड़ी ही देर बाद उस जगह को छोड़कर चल पड़े। जाते समय रेत पर कुछ लिखते गये :

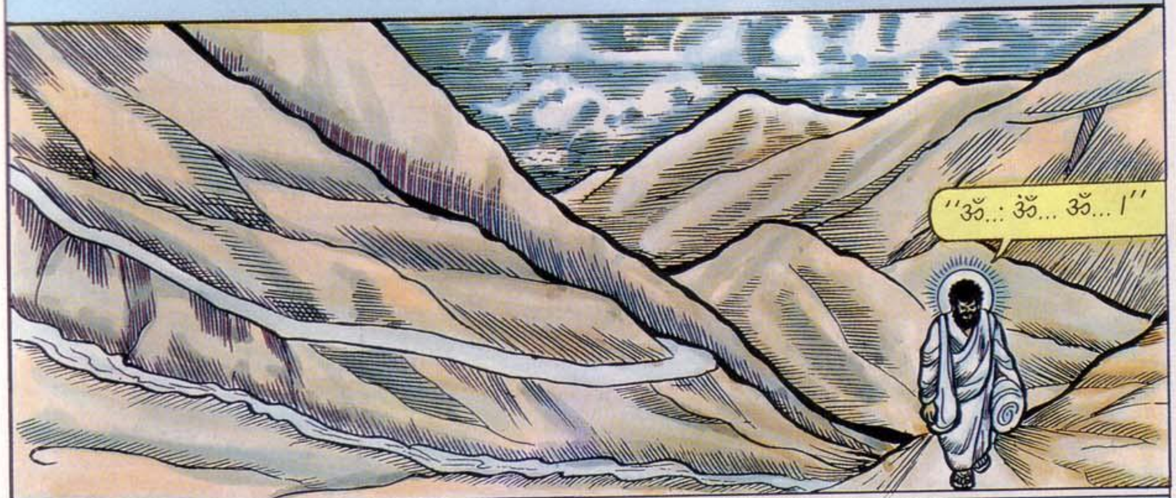


पिया दूध थोड़ा फल खाया, नदी किनारे जोगी धाया।

ग्रीष्म की गर्मी में पूज्यश्री हिमालय की गोद में स्थित नैनीताल में पूज्यपाद सद्गुरुदेव स्वामी श्री लीलाशाहजी बापू के आश्रम में गये। वहाँ गुरुदेव की आज्ञा लेकर वे हिमालय की यात्रा के लिए चल पड़े। नैनीताल से ऋषिकेश आये।



ऋषिकेश से टिहरी होकर पूज्यश्री लंका नामक स्थान पर आये। वहाँ से पैदल यात्रा करनी थी। उन्हें गंगोत्री जाना था। सँकरे दुर्गम रास्ते पैदल यात्रा करके पूज्यश्री गंगोत्री पहुँचे।



गंगोत्री में एक ज्ञाननिष्ठ और उन्मत्त संत रहते थे। वे दर्शनार्थियों से मिलते नहीं थे। बंद दरवाजे पर ही उटपटांग शब्द कहकर विदा कर देते। पूज्यश्री इन संत से मिलने गये। दरवाजा खटखटाने पर...



संत ने आश्चर्यचकित होकर दरवाजा खोला। पूज्यश्री का स्वागत करके उन्हें अंदर ले गये। दोनों संतों के बीच कई आध्यात्मिक बातें हुई।



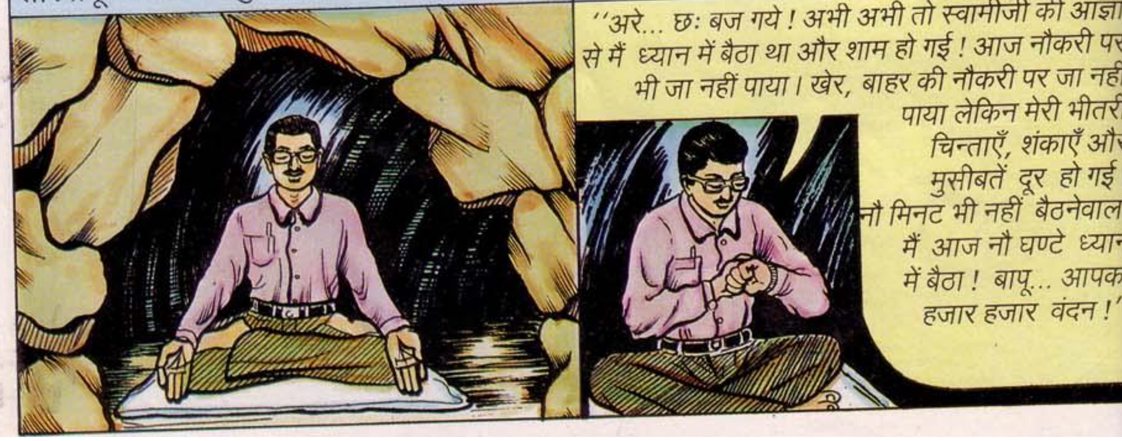
इस प्रकार ब्रह्मानन्द में मस्त पू. बापू ने उत्तर काशी, बद्रीनाथ, केदारनाथ आदि स्थानों के एकान्त अरण्यों में भ्रमण किया। कभी गर्मियों के दिनों में वे माउन्ट आबू के एकान्त अरण्यों में अकेले ही रहते जहाँ दिन के समय में जाना भी भयावह मालूम होता। शाम के वक्त भक्त लोग आते तो उन्हें सत्संग का लाभ देते।



आबू पर्वत का स्थान भयावह तो है लेकिन मनोहर भी उतना ही है। कैसी भी व्यक्ति का मन वहाँ जाते ही शान्त हो जाता है। एक दिन एक तारबाबू प्रातःकाल करीब नौ बजे पूज्यश्री के दर्शन करने आये।



तारबाबू पासवाली गुफा में जाकर ध्यान में बैठ गये। जब ध्यान से जागे तो शाम के छः बज चुके थे।

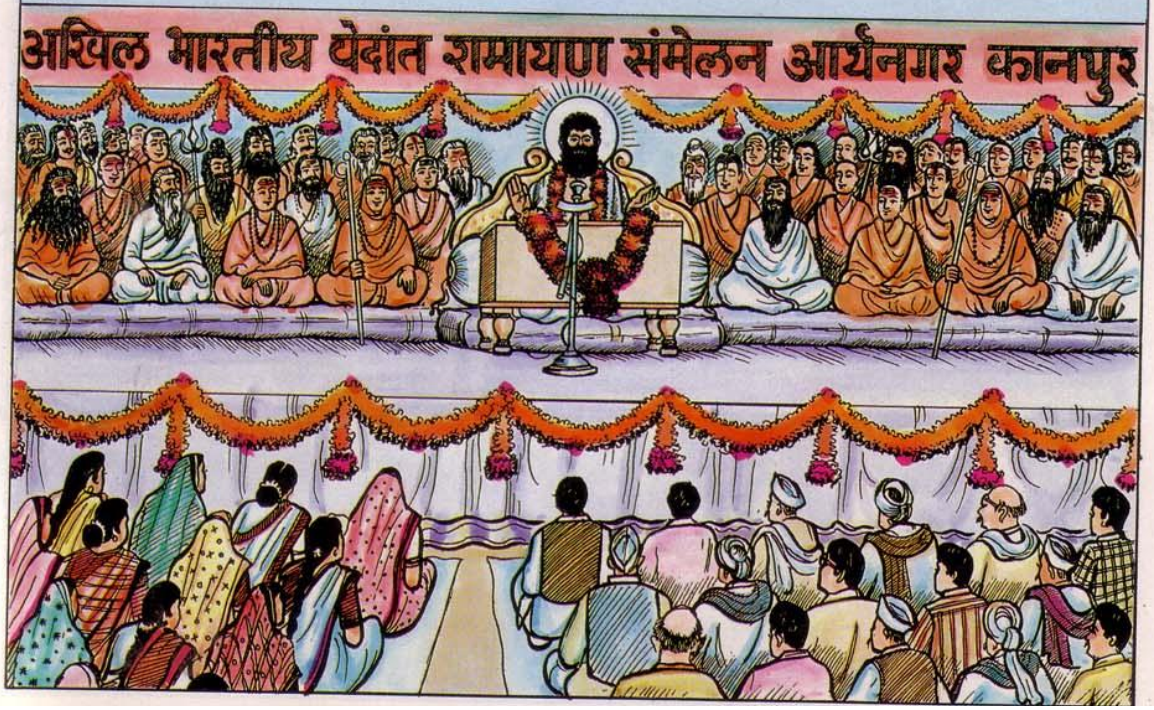


आबू के एकान्त में पूज्यश्री निर्भयता से रहते थे। घनघोर जंगल में खाली हाथ अकेले ही घूमने जाते। एक दिन इस प्रकार अपनी आत्म-परमात्म मस्ती में घूमने गये। सामने से मीलीट्री का एक आफिसर आया। पूज्यश्री को देखते ही वह बड़ा आश्वस्त हुआ, अब अपने को सुरक्षित महसूस करने लगा।



फिर पूज्यश्री ने उसे बाहर निकलने का सुगम मार्ग बताया।

विशाल धार्मिक सम्मेलन में उद्बोधन : सन १९७१ में आर्यनगर, कानपुर में आयोजित अखिल भारतीय वेदान्त रामायण सम्मेलन में भाग लेनेवाले भारत भर के प्रसिद्ध ४१ वक्ताओं के बीच पूज्यश्री ने अपनी अनुभववाणी की सरिता बहाई। वक्ता एवं श्रोता, तमाम लोग प्रभु-रस में पावन हुए।

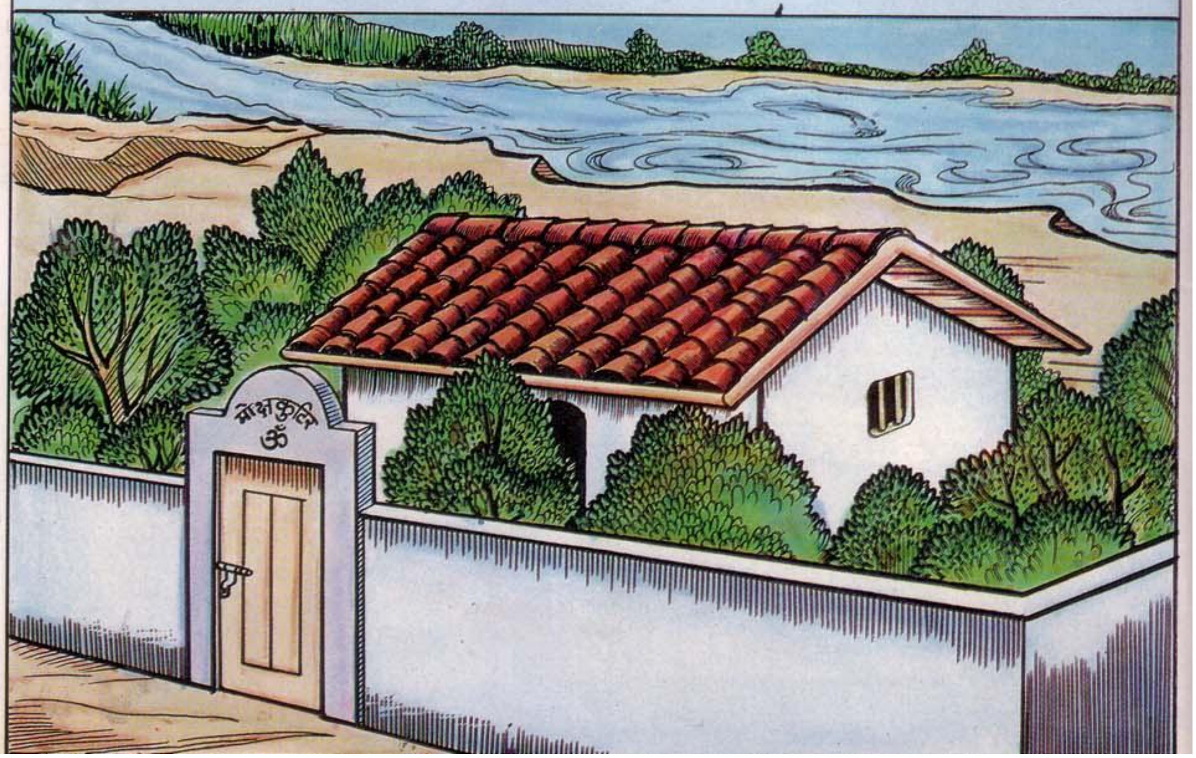


पूज्यश्री की इच्छा संसार से विरक्त रहने की थी लेकिन प्रारब्ध को यह मंजूर न था। वि.सं. २०२८ में पूज्यपाद स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज ने हरिद्वार में उनसे कहा :

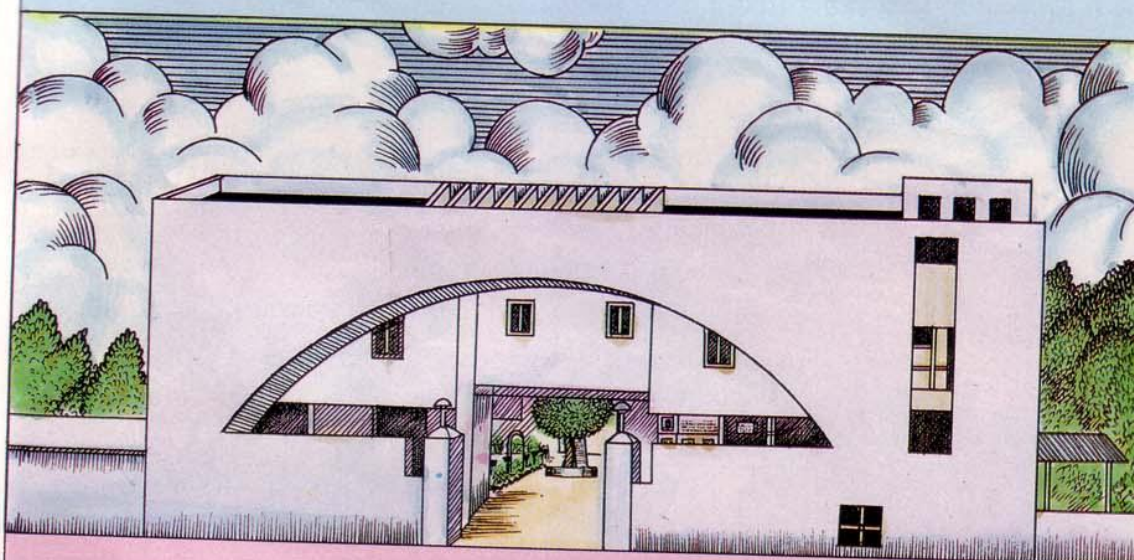
''अब गृहस्थाश्रम में जलकमलवत् रहकर ऋषिजीवन व्यतीत करते हुए संसार में भूले भटके हुए मनुष्यों को ईश्वर के मार्ग में लगाओ।''



गुरुदेव की आज्ञा मानकर पूज्यश्री ने वि.सं. २०२८ की गुरुपूर्णिमा के दिन सात साल के एकान्तवास के बाद अहमदाबाद की भूमि पर चरण रखा। अलग अलग स्थानों में सत्संग-प्रवचन दिये। शान्त, एकान्त और प्रकृति-प्रेमी स्वभाव के कारण साबर मैया के तीर मोटेरा गाँव के पास एक जगह में एकान्त सेवन करने लगे। भक्तों के आग्रह के कारण यहाँ एक कुटिया का निर्माण किया गया। उसका नाम पड़ा 'मोक्षकुटीर'।

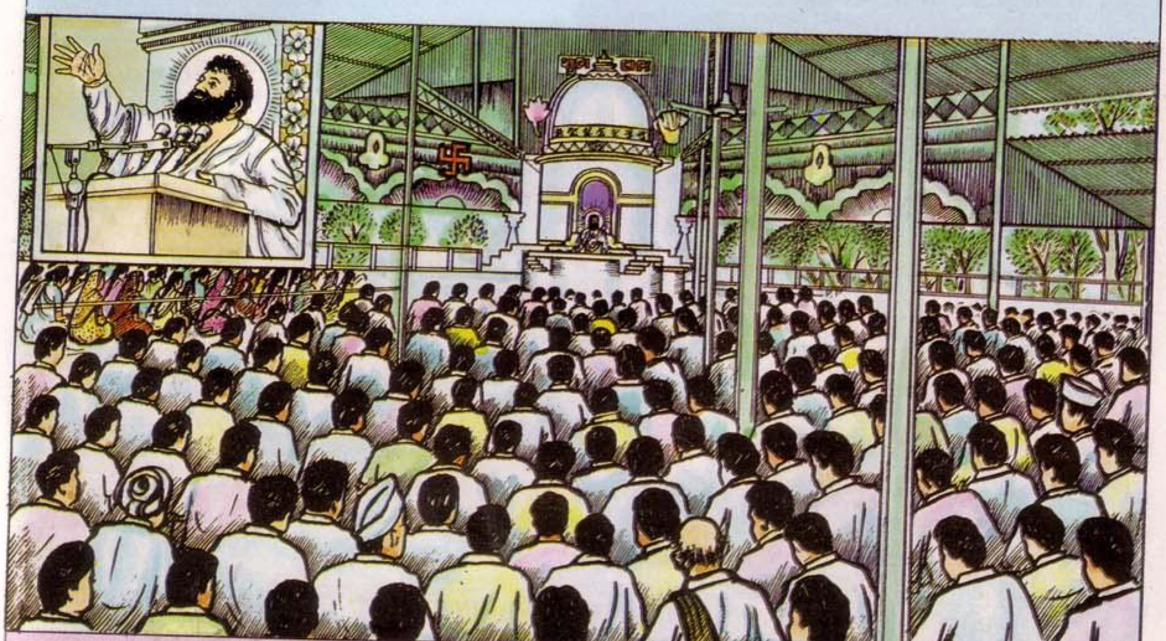


धीरे-धीरे वह उबड़-खाबड़ भयावह स्थान संत-चरण के पावन स्पर्श से पवित्र तीर्थधाम बन गया... आज लाखों लोगों को हृदय की शीतलता प्रदान करनेवाला मंगल धाम बन गया।



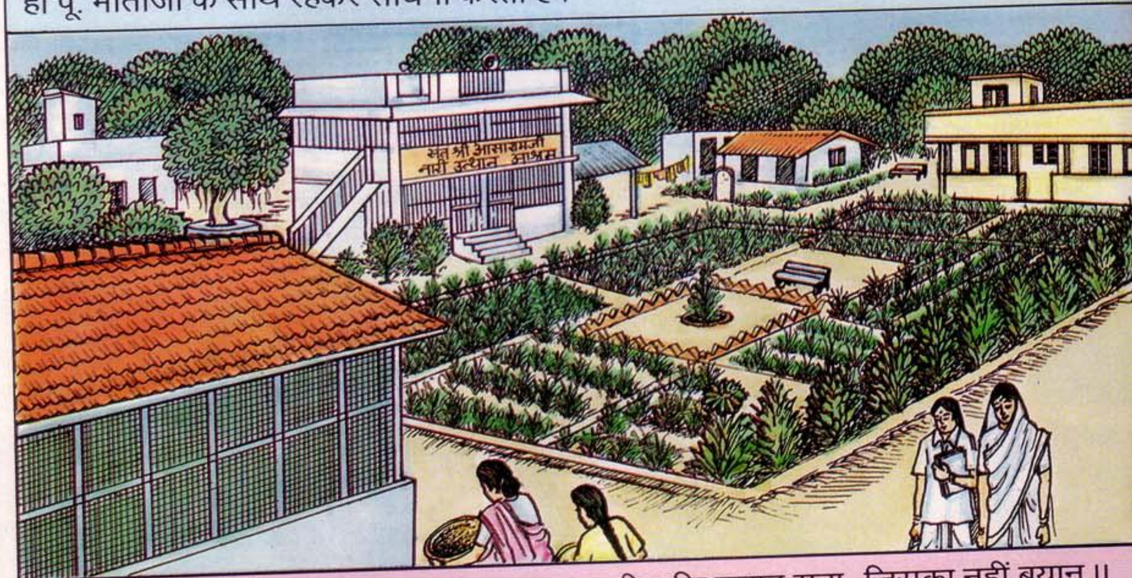
गांधीनगर गुजरात में, है मोटेरा ग्राम। ब्रह्मनिष्ठ श्री सन्त का, यही है पावन धाम॥

पू. बापू यहाँ भक्त-समूह को सत्संग एवं ध्यान से लाभान्वित करने लगे, सरल भाषा में सुखी, सफल एवं आनन्दमय जीवन के पाठ सिखाने लगे। आत्मानन्द से तृप्त अपने हृदय से ज्ञान की सरिता बहाकर प्रेमपूर्ण हृदय से, उदार हाथों से प्रसाद देने लगे।



आत्मानंद में मस्त हैं, करें वेदान्ती खेल। भक्ति योग और ज्ञान का, सद्गुरु करते मेल॥

विशाल संख्या में पुरुष एवं महिलाएँ पूज्यश्री के पावन जीवन उद्धारक सत्संग का लाभ लेने लगे। नारायणी स्वरूप नारियों में भी भगवत्प्रीति और आत्मोद्धार की भावना प्रबल होने लगी। फलतः पूज्यश्री की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में 'नारी उत्थान आश्रम' का निर्माण हुआ। वहाँ केवल महिलाएँ ही पू. माताजी के साथ रहकर साधना करती हैं।



साधिकाओं का अलग, आश्रम नारी उत्थान। नारी शक्ति जागृत सदा, जिसका नहीं बयान॥

सन १९७३ में साबरमती में भयंकर बाढ़ आयी। नदी भयजनक स्तर को लांघकर निरंकुश बह रही थी। नदी से ३० फूट ऊपर आश्रम के प्रांगण में बाढ़ के पानी पहुँचने की तैयारी में थे। आश्रम की चारों ओर पानी ही पानी दिखाई दे रहा था। आश्रम एक द्वीप बन गया था। उस समय पूज्यश्री अपनी कुटिया से बाहर निकले।

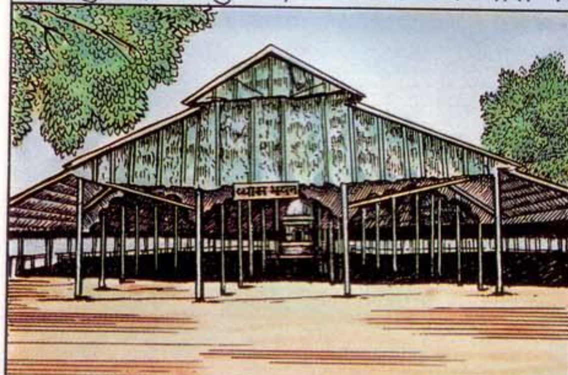


पूज्यश्री ने नदी के पानी में अपना चरण डाला और मानो उस पावन स्पर्श के लिए ही नदी ऊपर उठी हो ऐसे वह धीरे धीरे शान्त हो गई। बाढ़ के पानी उतर गये। रेडियो पर से ३० फूट पानी बढ़ने की संभावना प्रसारित हो रही थी लेकिन पानी २२.५ फूट से एक इन्च भी आगे नहीं बढ़ा यह जगप्रसिद्ध बात है।

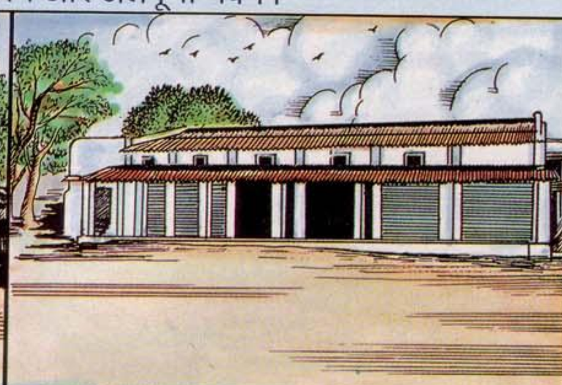
अब बीज में से अंकुरित होकर विकास का वटवृक्ष गगनगामी हो चला है। छोटी-सी मोक्षकुटीर से प्रारंभित आश्रम अब देश विदेश के भक्तों एवं साधकों के लिए यात्राधाम, मोक्षद्वार, ज्ञानमठ बन चुका है।



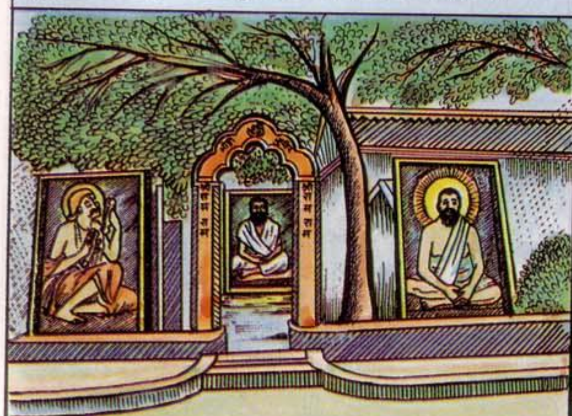
एक विहंगावलोकन : ये हैं पू. बापू के करकमल द्वारा विकसित एवं शक्तिपात से सिद्ध बने हुए 'बड़ बादशाह' । यहाँ असंख्य लोगों की श्रद्धा फलवती हो रही है और होती ही रहेगी । पास में है हवनकुण्ड, मोक्षकुटीर, सत्संग मण्डप व्यास भवन और अन्नपूर्णा भवन।



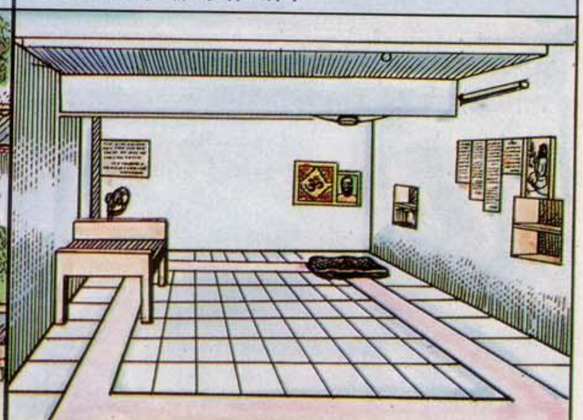
नारियल के पत्ते एवं बाँस से निर्मित व्यास भवन, जिसमें एक ही साथ करीब दस हजार लोग बैठकर पूज्यश्री के कृपा-अमृत का लाभ ले सकते हैं।



यह है वशिष्ठ भवन जो पूज्यश्री के दैनिक सत्संग, ध्यान और कीर्तन के कार्यक्रम के लिए निर्मित किया गया था।

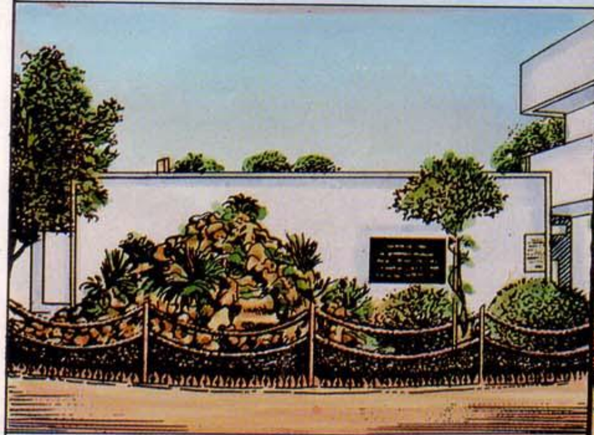


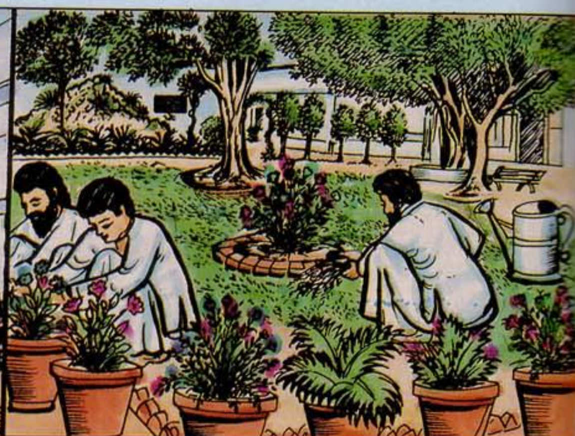
आन्तरराष्ट्रीय क्षितिजों में भव्यता धारण करनेवाले इस आश्रम का श्रीगणेश जिसमें हुआ उस मोक्षकुटीर को प्रेरक चित्रों से सजाकर दर्शनार्थियों के लिए खुली रखी गई है।



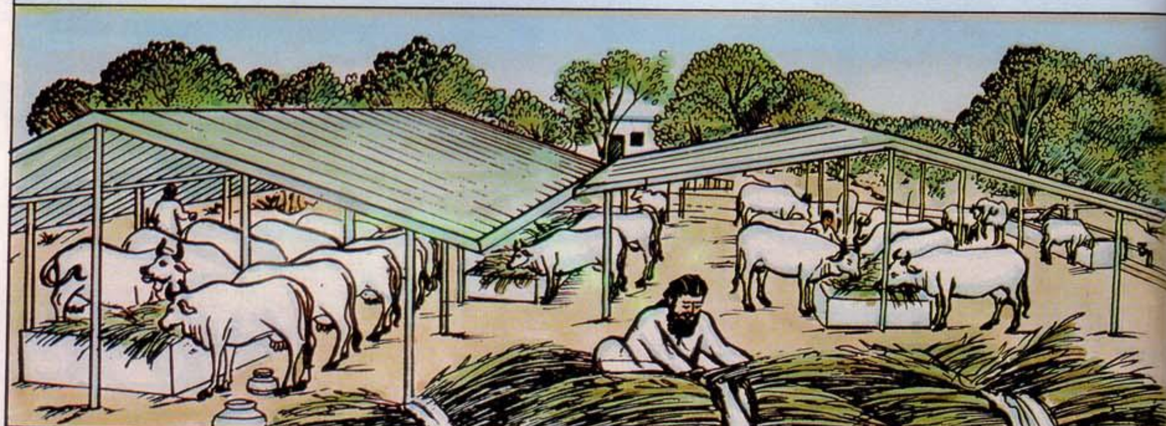
आश्रम का मौन मंदिर... जिसमें एक सप्ताह तक एकान्त मौन साधना के लिए बैठकर साधक आध्यात्मिक गहन योगानुभूतियाँ कर सकता है।

आश्रम में सुन्दर मनोहर बगीचा लगाया गया है। विभिन्न रंगबिरंगी फूल-पौधे एवं वृक्ष उगाये गये हैं। हरियाली लॉन पर बैठकर आगन्तुक भक्त सत्संग का आनन्द लेते हैं। आश्रम के साधक ही बागवानी संभालते हैं।





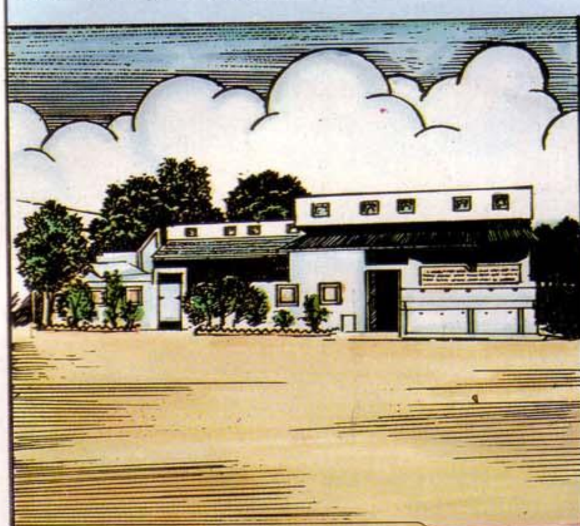
आश्रम की गौशाला में दाने-पानी आदि से गौ माताओं का पालन-पोषण एवं रक्षण किया जाता है। दिनोदिन गायों की संख्या बढ़ रही है।



आश्रम के साधक आश्रम की जमीन में कृषिकार्य स्वयं ही करते हैं। गायों के लिए घास एवं अनाज आदि उगाते हैं। खेत में निराई, कटाई का कार्य आश्रम की साधिकाएँ संभाल लेती हैं।

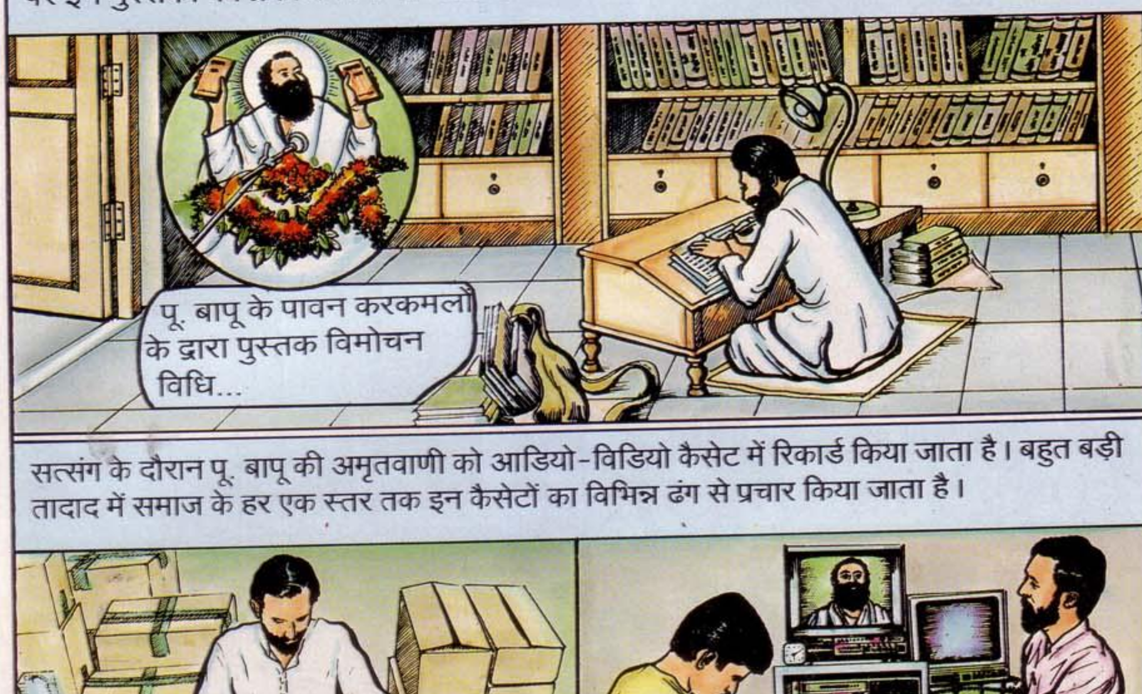


अन्नपूर्णा भवन में जात-पाँत के भेदभाव रहित, साधना के इच्छुक सब भक्तों को सादा, सात्त्विक और साधना में सहाय रूप भोजन दिया जाता है।



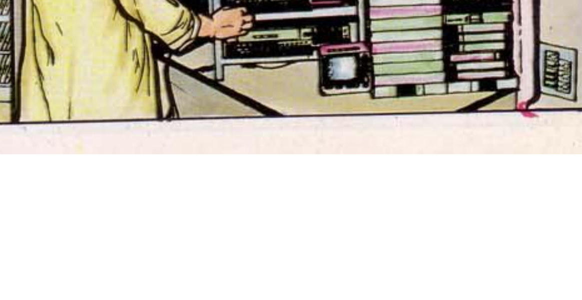


आश्रम के लेखक पू. बापू की अमृतवाणी को संकलित करके पुस्तक का रूप देते हैं। विभिन्न प्रसंगों पर इन पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है।

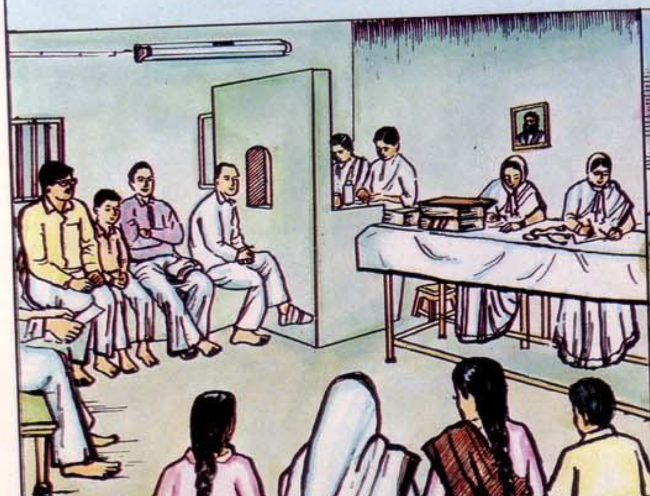


सत्संग के दौरान पू. बापू की अमृतवाणी को आडियो-विडियो कैसेट में रिकार्ड किया जाता है। बहुत बड़ी तादाद में समाज के हर एक स्तर तक इन कैसेटों का विभिन्न ढंग से प्रचार किया जाता है।

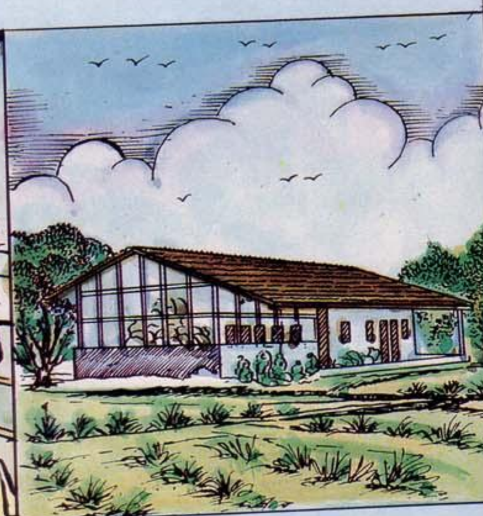




आश्रम की साधिकाएँ समाजसेवा का कार्य बहुत ही लगन से करती हैं। आश्रम की महिला डॉक्टर पेट के दर्द, बुखार, सर्दी-जुकाम, एसीडीटी एवं अन्य कई नामी-अनामी रोगों का इलाज करती है। ऐसे असंख्य रोगों को मिटानेवाला संतकृपा चूर्ण आश्रम की साधिकाएँ बड़ी निष्ठा एवं सेवाभाव से बनाती हैं। लोगों को यह चूर्ण रियायत मूल्य से दिया जाता है। अत्यंत विश्वासपूर्वक इस चूर्ण का इस्तेमाल करके देश-विदेश के लोग डॉक्टरों की दवाइयों एवं इंजेक्शनों से पल्ला छुड़ाते हैं।



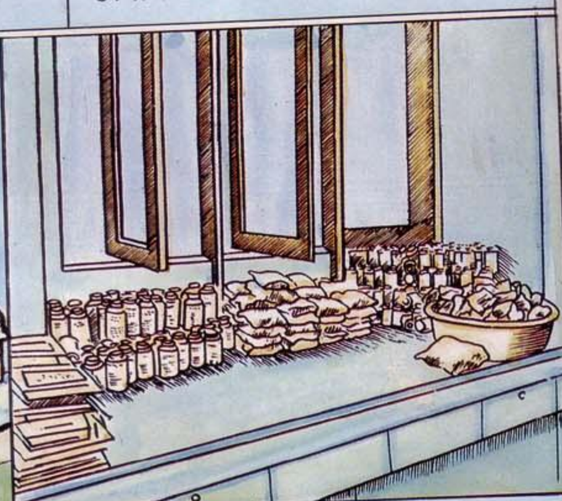
आश्रम में चलनेवाला धन्वंतरि आरोग्य केन्द्र... यहाँ पू. बापू के पावन मार्गदर्शन में आयुर्वेद के कुशल डॉक्टर दर्दी-नारायणों की निःशुल्क सेवा करते हैं।



'संत श्री आसारामजी नारी उत्थान आश्रम' में उद्योग भवन... आश्रम की साधिकाएँ इसमें संतकृपा चूर्ण का उत्पादन करती हैं।

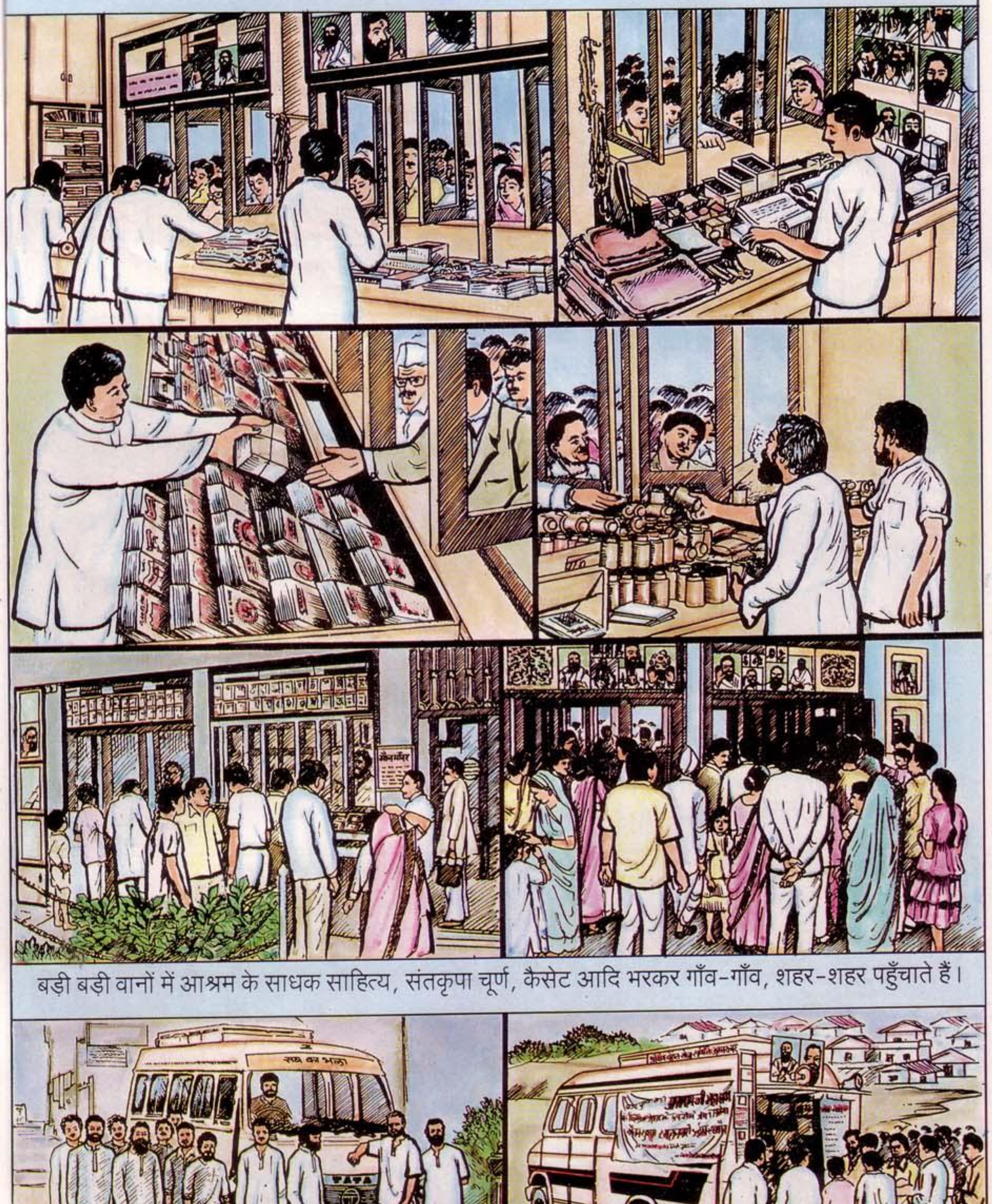


संतकृपा चूर्ण के कच्चे माल को छान-बिनकर साफ करने में रत साधिकाएँ...



तैयार बने हुए संतकृपा चूर्ण को जनता जनार्दन की सेवा हेतु आश्रम के कार्यालय के स्टाल पर वितरण के लिए रखा जाता है।

उन्नत जीवन और साधना में सहायक साधनों का आकर्षण भला किसको नहीं होगा ?

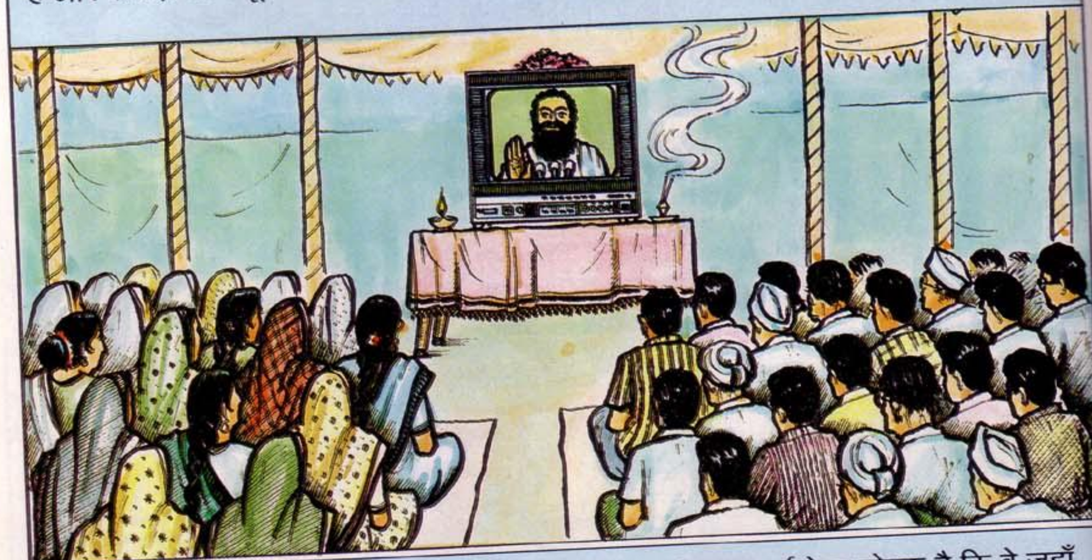


बड़ी बड़ी वानों में आश्रम के साधक साहित्य, संतकृपा चूर्ण, कैसेट आदि भरकर गाँव-गाँव, शहर-शहर पहुँचाते हैं।

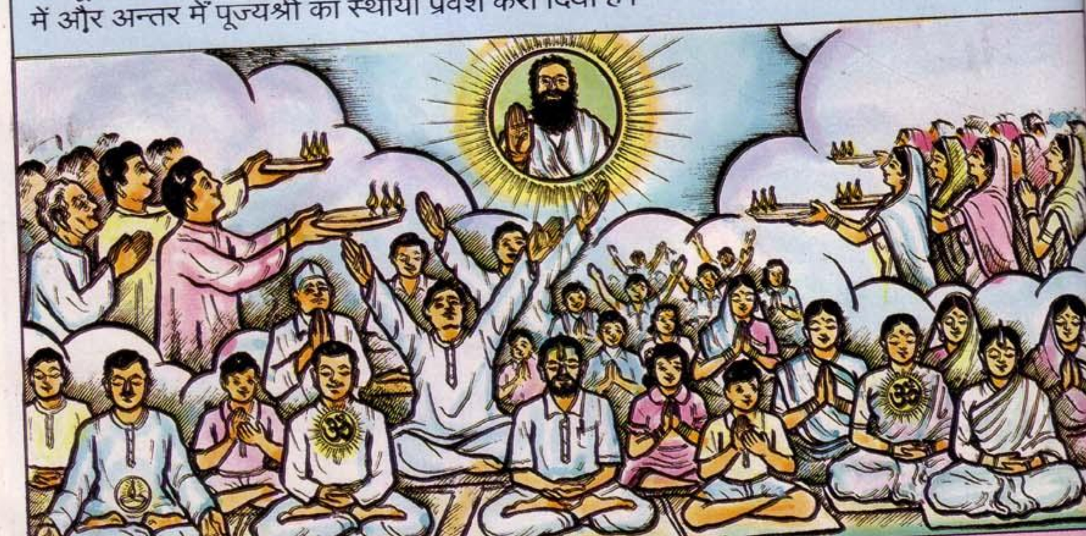


पू.बापू का सत्साहित्य, कैसेट्स, चूर्ण, फोटोग्राफ्स आदि आश्रम के स्टाल पर किफायती मूल्य से उपलब्ध है।

परम गुरु पूज्यपाद स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज ज्ञान-प्रचार का जो कार्य पैदल चलकर करते थे वह कार्य अब जेट युग में अद्यतन साधनों का उपयोग करके किये जाते हैं। अहमदाबाद, बड़ौदा, सुरत, इन्दौर, भोपाल, रतलाम, उदयपुर, अजमेर, मेहसाना, पालनपुर आदि अनेक शहरों में पूज्यश्री के साधक घर में रहते हुए सत्संग की योजनाएँ चलाते हैं। गाँव-गाँव में, गली-गली में, देश में और विदेश में अब लाखों लोग विडियो कैसेट के द्वारा पूज्यश्री के दर्शन एवं सत्संग का लाभ लेते हैं और करोड़ों लोग पूज्यश्री से परिचित बने हैं।



पूज्यश्री का आत्मिक दिव्य प्रेम, सरल, मधुर वाणी और योगसामर्थ्य ऐसा मोहक है कि वे जहाँ जहाँ जाते हैं वहाँ परायों को अपना बना लेते हैं... अपनों को उत्साहित करके परमात्मा के पथ पर अग्रसर कर देते हैं। जो लोग पूज्यश्री के दर्शन करते हैं और सत्संग में आते हैं वे आकांक्षा करते हैं कि पूज्यश्री हमारे गाँव में पधारें और हमारे घर में निवास करें। इस निर्दोष प्रेम ने जन जन के घर में और अन्तर में पूज्यश्री का स्थायी प्रवेश करा दिया है।

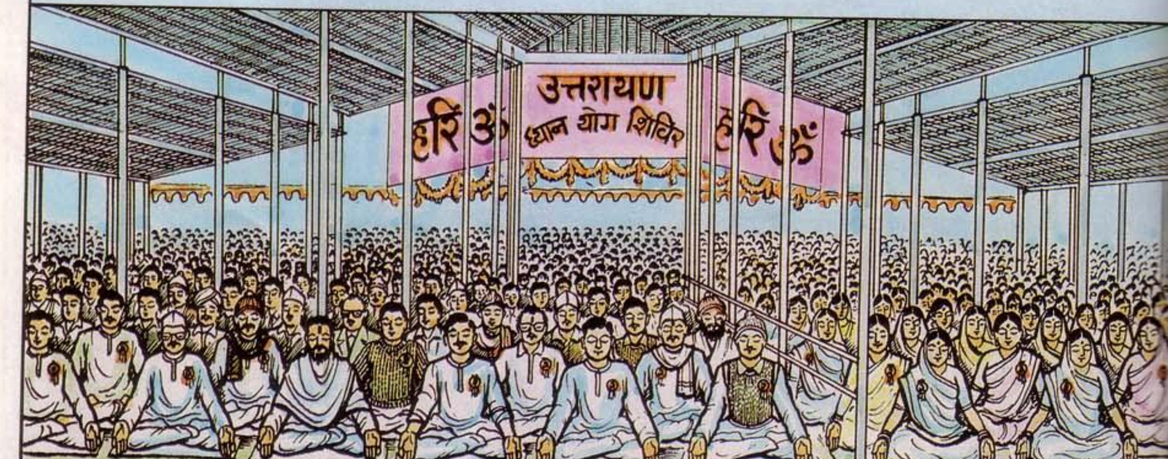


बालक वृद्ध और नरनारी, सभी प्रेरणा पायें भारी। एक बार जो दर्शन पाये, शांति का अनुभव हो जाये॥

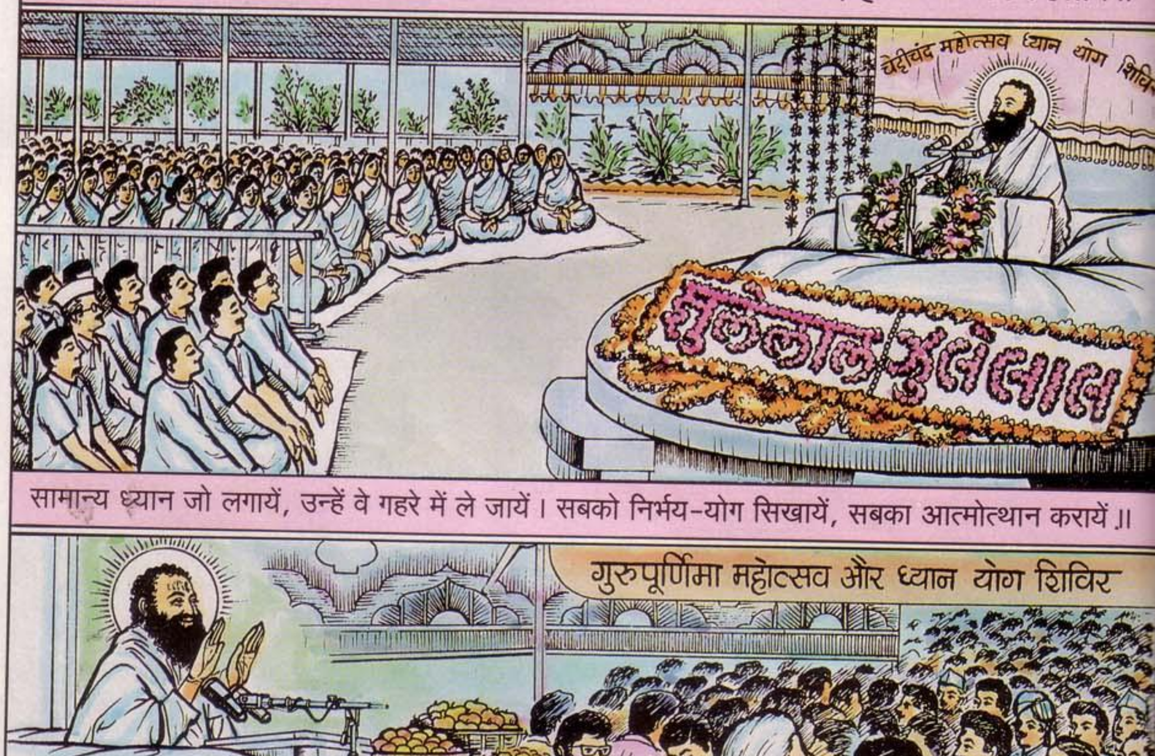
भक्तों के अति आग्रह के कारण पू. बापू गाँव-गाँव में, शहर-शहर में प्रवास करके देश के कोने-कोने में अपने सद्गुरुदेव का प्रसाद, ज्ञानामृत पहुँचाने लगे। स्थानीय भक्तों के आग्रह एवं पुण्यों के प्रताप से जगह-जगह पू. बापू के आश्रम स्थापित होने लगे, सत्संग मंडल एवं योग वेदान्त सेवा समिति की शाखाएँ निर्मित होने लगीं। अभी भारत एवं विदेशों में पूज्य बापू के आश्रम इस प्रकार हैं : ✻ **गुजरात :** अमदावाद, सूरत, राजकोट, बुधेल-भावनगर, वडोदरा, हिम्मतनगर, मोड़ासा, बोरतवाड़ा, विसनगर, धामणवा, लुणावाड़ा, गोधरा, लींबड़ी, भैरवी, वलसाड़, वापी, भेटासी, वासद, बोन्टा, वल्लभीपुर, कलोल, विरमगाम, वाव (थराद), सेलवासा, दाँडी, ओझल, बारडोली, बायड, मूछ की पाड, सरसवा, वीरपुर (पंचमहाल), पाटण, बडेसरा। ✻ **राजस्थान :** पुष्कर-अजमेर, जोधपुर, उदयपुर, कोटा, आमेट, बाड़मेर, सुमेरपुर (पाली), सागवाड़ा, मांडल, भीलवाड़ा, किशनगढ़, छोटी खाटू, बाराँ, सरमथुरा (धौलपुर), श्रीनगर (अजमेर). ✻ **मध्य प्रदेश :** इन्दौर, भोपाल, ग्वालियर, पंचेड़ (रतलाम), उज्जैन, रायपुर, बिलासपुर, अम्बिकापुर, देवास, छिंदवाड़ा, राणापुर, मनावर, अमझेरा (धार), लदुना, लिंगा, बड़गाँव (खरगौन), व्यौहारी, खजरी (छिंदवाड़ा), म्याना, पेटलावद। ✻ **उत्तर प्रदेश :** आगरा, वृंदावन, हृषिकेश, गाजियाबाद, कानपुर, उँझानी, सहारनपुर, झाँसी, देहरादून, हरिद्वार, मुजफ्फरनगर, टिहरी। ✻ **महाराष्ट्र :** उल्हासनगर, औरंगाबाद, प्रकाशा, नासिक, गोंदिया, नागपुर, शोलापुर, भुसावल, मुम्बई (केन्द्र). ✻ **आन्ध्र प्रदेश :** हैदराबाद। ✻ **दिल्ली :** नई दिल्ली, रजोकरी। ✻ **चंडीगढ़ :** चंडीगढ़। ✻ **हरियाणा :** पानीपत, रेवाड़ी, हिसार, बहादुरगढ़, फरीदाबाद, अम्बाला, करनाल, सिरसा, कैथल, नरवाना। ✻ **पंजाब :** लुधियाना, अमृतसर, फाजिल्का, जालंधर, आदमपुर। ✻ **पश्चिम बंगाल :** कलकत्ता। ✻ **उड़ीसा :** गंजाम, कटक। ✻ **यु. एस. ए. :** मेटावन।



पूज्यश्री के दर्शन एवं सत्संग के लिए कई लोग आने लगे। पूज्यश्री का मार्गदर्शन पाकर लाखों लोगों ने परमात्म-प्राप्ति के मार्ग में कदम रखे। अहमदाबाद आश्रम में तथा अन्यत्र जगह जगह ध्यान योग साधना शिविर एवं जाहिर सत्संग के कार्यक्रम होने लगे। हजारों लाखों साधक भक्तजन उनमें शरीक होने लगे।



नित्य विविध प्रयोग करायें, नादानुसन्धान बतायें। नाभि से वे ओम कहलायें, हृदय से वे राम कहलायें ॥



सामान्य ध्यान जो लगायें, उन्हें वे गहरे में ले जायें। सबको निर्भय-योग सिखायें, सबका आत्मोत्थान करायें ॥



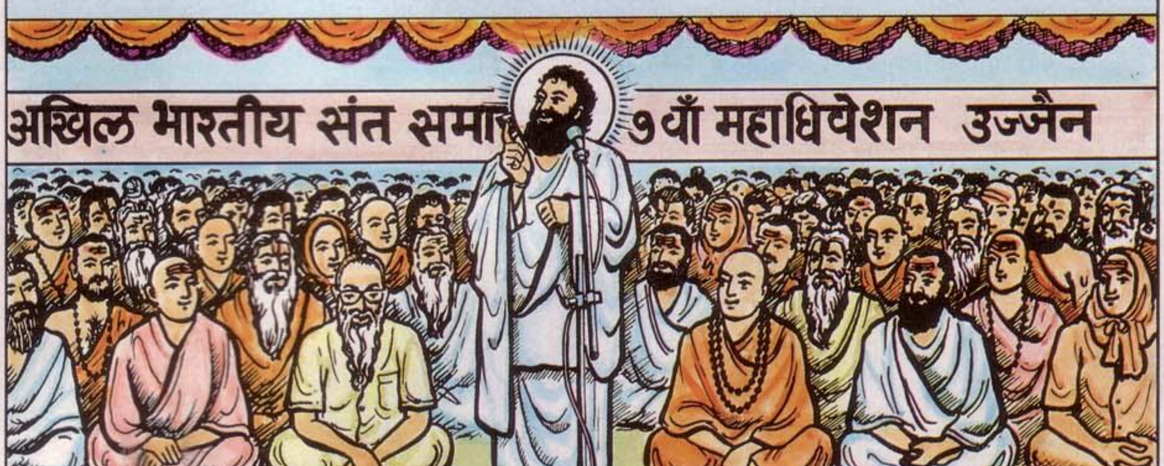
श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र के मैदान में शंखनाद किया था और पूज्यपाद श्री आसारामजी महाराज ने सिंहस्थ कुंभ पर्व (१९९२) उज्जैन में प्राचीन भारत की ब्रह्मविद्या का, प्रभुप्रेम का, योग और वेदान्त अमृत का शंखनाद गुँजा दिया।



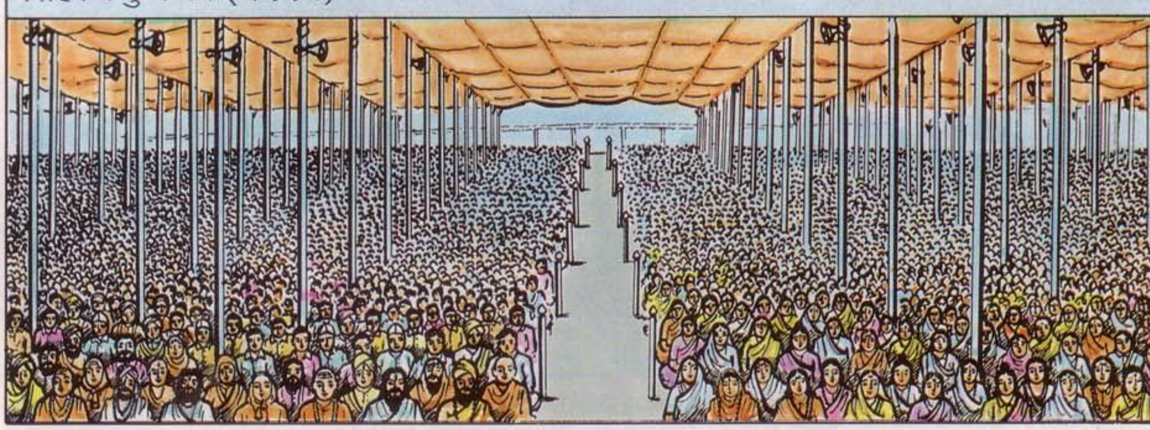
सिंहस्थ कुंभ पर्व उज्जैन में संत श्री आसारामजी नगर का मुख्य प्रवेशद्वार।



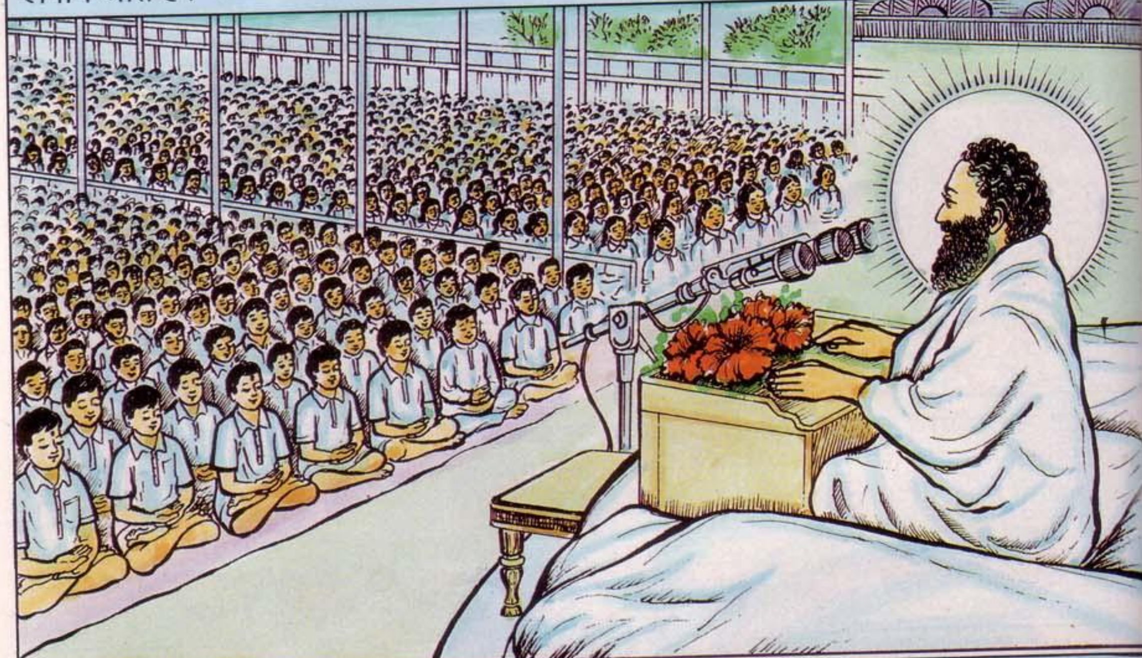
अखिल भारत साधु समाज के सातवें अधिवेशन उज्जैन में वरिष्ठ अग्रगण्य संतों, मंडलेश्वरों, शंकराचार्यों, महंतों, मठाधीशों, विरक्तों के बीच विराट धर्मपरायण जनता के समक्ष भारतीय संस्कृति के विषय में पूज्यश्री का प्रभावशाली मार्गदर्शक प्रवचन।



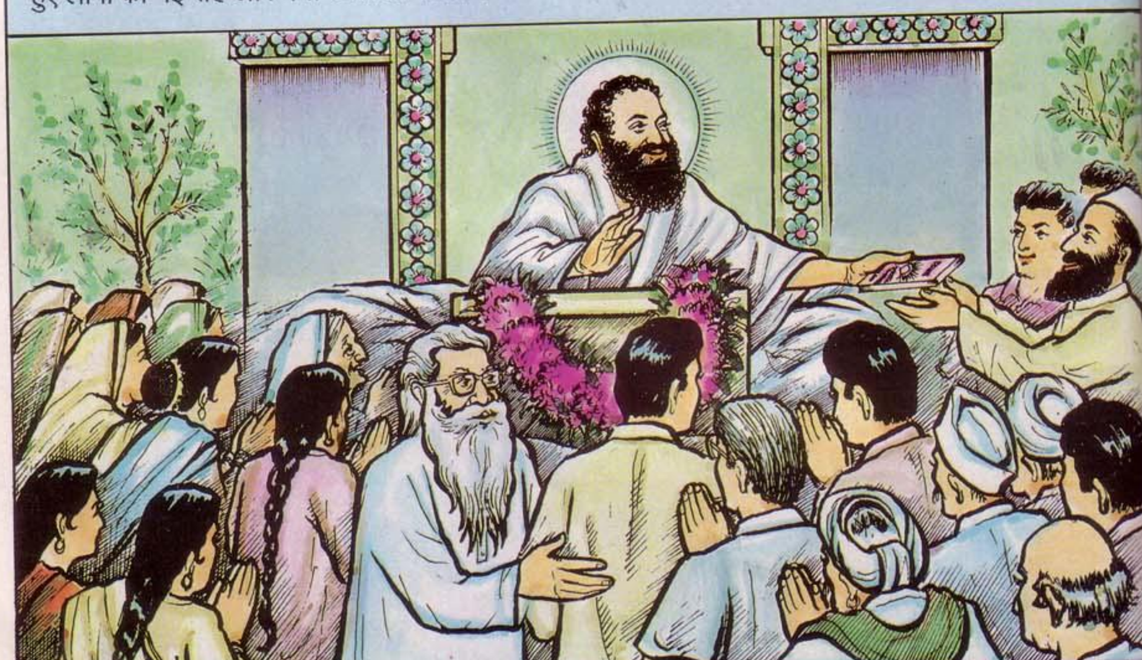
सिंहस्थ कुंभ पर्व (१९९२) उज्जैन के संत-सम्मेलन में उपस्थित संतों एवं जनता...



बच्चों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए पूज्यश्री के सान्निध्य में विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविरों का आयोजन होता है। उनमें बचपन से ही विद्यार्थियों को चारित्र्य निर्माण एवं योगासन, प्राणायाम आदि की तालीम दी जाती है। आश्रमों में एवं अन्यत्र ऐसे शिविर लगाये जाते हैं।

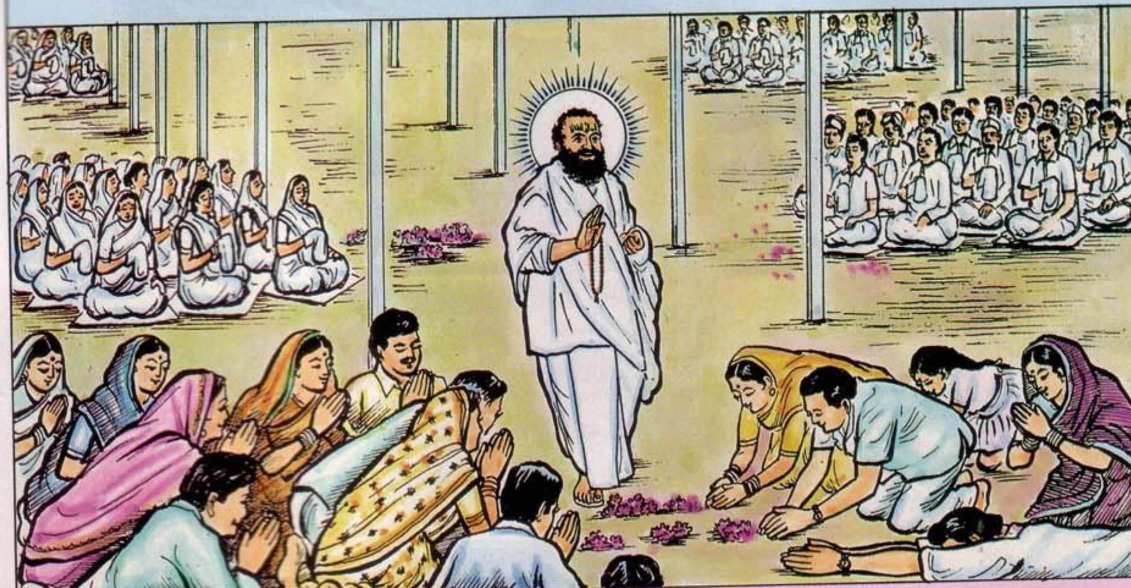


हर वर्ग के एवं हर आयु के लोग पूज्यश्री के पास आकर अपने दुःख दर्दों से मुक्ति पाते हैं। जीवन में हताश, निराश बने हुए लोगों को नई राह और नया उत्साह मिलता है। रोगियों को दवाई तथा गरीब एवं दुःखी लोगों को दुवा मिलती है।



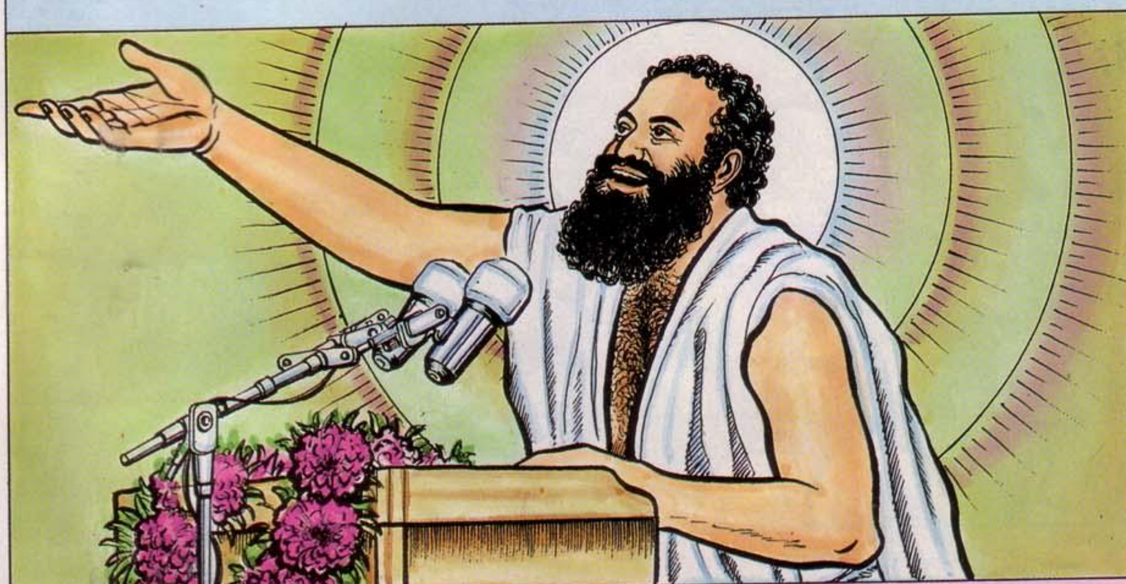
हजारों के रोग मिटाये, और लाखों के शोक छुड़ाये। अमृतमय प्रसाद जब देते, भक्त का रोग शोक हर लेते ॥

जिन्होंने पूज्यश्री से मंत्रदीक्षा पायी उनका जीवन धन्य धन्य हो गया। प्रारम्भ में पाँच पच्चीस साधक और अब तो हजारों भक्तजन एक साथ पूज्यश्री से मंत्रदीक्षा लेते हैं और अपने आत्म-चैतन्य का प्रकाश पाते हैं, जीवन में दिव्यता का अनुभव करते हैं।



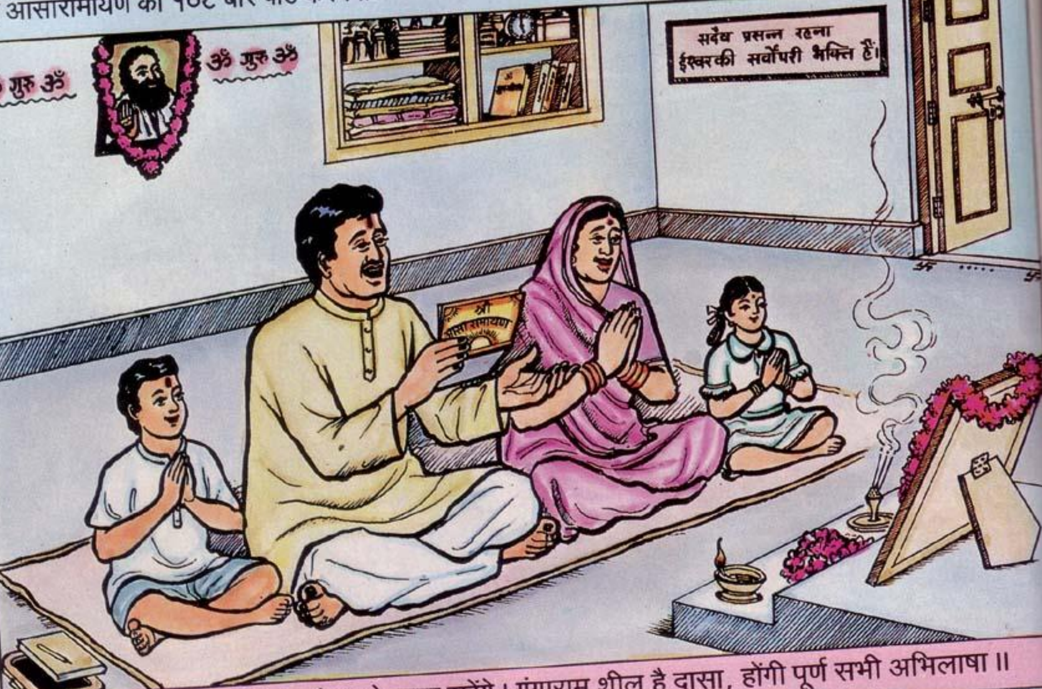
जिसने नाम का दान लिया है, गुरु अमृत का पान किया है। उनका योग क्षेम वे रखते, वे न तीन तापों से तपते॥
धर्म कामार्थ मोक्ष वे पाते, आपद रोगों से बच जाते। सभी शिष्य रक्षा पाते हैं, सूक्ष्म शरीर गुरु आते हैं॥

सचमुच, पूज्यश्री सहज में निहाल कर देते हैं। बाहर से कठोर और भीतर से कोमल, दयालु चित्तवाले ये महापुरुष लोगों के दुःख देखकर द्रवीभूत हो जाते हैं। वे तो चाहते हैं कि सब लोग परमात्मा का प्रेम प्राप्त कर लें और अपनी जन्म जन्म की खाली झोली भर लें।

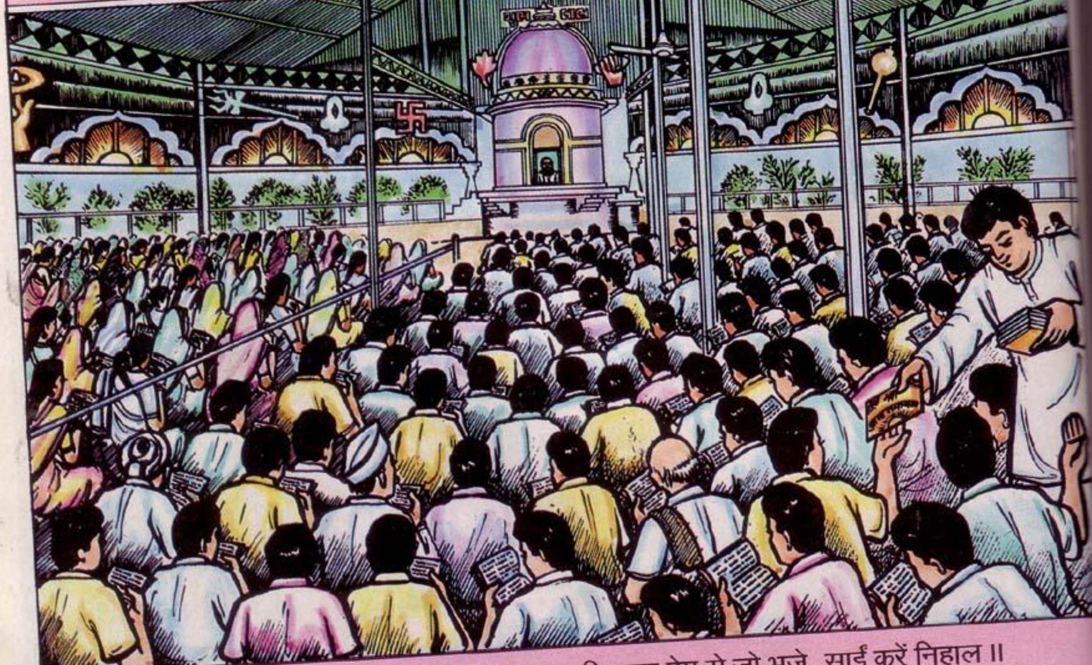


सचमुच गुरु हैं दीनदयाल, सहज ही कर देते हैं निहाल। वे चाहते सब झोली भर लें, निज आत्मा का दर्शन कर लें॥

श्री आसारामायण का १०८ बार पाठ करनेवाले भक्त की सब मनोकामनाएँ पूरी होती हैं, सब कार्य सफल होते हैं।



एकसौ आठ जो पाठ करेंगे, उनके सारे काज सरेंगे। गंगाराम शील है दासा, होंगी पूर्ण सभी अभिलाषा ॥



वराभयदाता सद्गुरु परम हि भक्त कृपाल। निश्छल प्रेम से जो भजे, साईं करें निहाल ॥
मन में नाम तेरा रहे, मुख पे रहे सुगीत। हम को इतना दीजिए, रहे चरण में प्रीत ॥



वेदान्त शक्तिपात की अमृतमय वर्षा के द्वारा लाखों–लाखों हृदयों को एक साथ ईश्वरीय आनंद में सराबोर करके उनके जीवन को अमृतमय बनानेवाले प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू की प्रतिभासंपन्न बाल्यावस्था।

होनहार बिरवान के होत चिकने पात।



गुरुदेव की कृपादृष्टि और संकल्प मात्र से आसुमल अपने निज स्वरूप में निमग्न हुए। जन्म-जन्म के पाप-पुण्य, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य को त्यागकर वे स्वात्मानन्द में, परब्रह्म परमात्मा में स्थिर हुए। ऐसा साधक सिद्ध बनकर ऐसे आनन्दसागर में गोता लगाता है कि फिर अपने सुख के लिए संसार की ओर निगाह दौड़ाने की उसे आवश्यकता ही नहीं रहती।

आ गया आना जहाँ पहुँचा वहाँ जाना जहाँ।
अब नहीं आना न जाना काम क्या बाकी रहा॥
जानना था सो ही जाना काम क्या बाकी रहा।
लग गया पूरा निशाना काम क्या बाकी रहा॥

ॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐ